





अपनी ओर से

सुराणाबाई ग्रन्थ-माना का तीमरा पुष्प पाठकों तक पहुँचाते पुष् हमें बर्ष हो रहा है।

यह उपस्यास ३३ वर्ष पूर्व-वि० सं० १९७३ फाल्युन में-यहली बार प्रकाशित हुआ था और पं० नाथुरामजी प्रेमीने जैन-हिन्दी थे प्राहकों को भेट स्वस्य विनाण किया था !

यदि इन तीस-पैशीम बहाँ के बीच हिन्दी साहित्य में उपन्यासों की बहुत-कुछ मृद्धि हुई है और उपन्यास काला का मां अच्छा विकास दुआ है, तथादि प्रश्तुत उपन्यास का अपना जी बेरेप महत्त्व है, उसे नहीं गुलाया जा सकता | प्रेम और न्याम, फ्रांच्य और निष्द्रता का जो बालाव्यत प्रार्मीन भूमिक पर अधिष्ठित (आ है, यह पाठन के मन पर स्वायी प्रभाव जाल जाता है। इस्तिर-कार्यान प्रश्निन और सामाजिक स्थिति को सम्मन्ते के इस्तम उपन्यान में पूर्व मामाजिक स्थिति को सम्मन्ते के

डरन्यास के विचन-सील टेलका ने जारनी प्रस्तायना के स्थास के करणा के बहुत-तूत वह विच है।

अनुष्यं । १ १९८८ तम् स्थापीय ने यह कृति पहीर १९८० १८६८ हो । या जीता गरी प्रदेशकाल १६ रिसी हो । १९८८ १

अनुवादक द्वारा क्षेत्रवर्षक समर्थित है।" अनुवादक का परिचर हिटीके खम्ब प्रतिष्टित विद्वान और अनके निकट स्तेडी पे नाधरामजी प्रेमी ने जिला है। इससे अनुबादक और भी०चिरंजीलासर्न के सम्बन्ध की कराना की जा समती है। इस इसके लिए एं। नायुगरकी प्रेमी के और रिशेष रूपसे औ॰ गेंदाजालजी सगर बदनगर के आमारी हैं कि अनुसदक का परिचय प्राप्त हो। सब श्रीर बह दिया जा सका। उनका चित्र भी हमें श्रीक गैदालालजी से की बात दुआ। उपन्यास के देखक ही। स्त्रीत्रभी के भी इम आभारी है बिन्होंने सहज मार्यसे इसके प्रकाशन की अनुवित प्रदान की । इस उत्तरवास की बहुत पहुछे-पक भूष पूर्व ही-छा जान वाहिए या. लेकिन देस संचाककों की असुविधा से इस समय ... प्रकाशित नहीं कर सके, इसका क्षेत्र है।

य• तुनर्वकिसारमी मुखन १, तीर मेदा महिर दिश्ली के बिराय हरत के जिल्ला की मीलमद ती जिल जात को सकती। इयत हम्म्लीम स्थानी १८ अन्त करका हथा, विकाद को सही व क छह दय यम जिल मी सहता।

ड सकता है कि मर्द्द क्षों के इसका संयान नैचे और कट्यामीट डॉकन ज्द्र समन्त्र भूगत संहटन अनुवादक

किया; और जिनको प्रेम-पूर्ण सहानुपूर्त ने मेरे जीवन के विष् मार्ग को सरक बनाया; उन उत्माहे, सुत्रीज बन्धु पर्धा-निवार्स स्रोपन मेठ चित्रेजीलालजी के करकाओं में यह प्रवित्र उपहा



मूल लेखककी प्रस्तावना

प्रथमिक मनको जितना कछ छठाना पड़ना है जनना कह ऐसे मनोरिक कवा-साहित्यके अञ्चरीक्षमें नहीं उठाना पड़ना, और, उसका वर्णनीय परनुको छाप परीक्ष रिनिस ही पाठकोंके हृदय-यट पर अंतिक हो जाती है। एक रेखक अपने विश्व समयके अनुकको छा कथा-साहित्यके द्वारा पाटकोंके हृदय पर निननी स्पष्ट स्थित, सकता है जननी स्पष्ट अस्य जीरियेमे शायद हो कोई अकित

और यह यह कि इतिहास बीगरह अन्य साहित्यके अनुशीसनों

हार बचा-चाहित्यक द्वारा पाटनाक हदय पर । ननना स्वाह आकता ं. सकता है जननी स्वाह अध्य जिथिने शायर ही कोई अकित ं. सके । इसने जनेक काणोंने पक यह मो सुस्य कारण है कि बचा-सहित्य जिल्हा मानकाओं के साम्य करनेक्स अध्यन सुन्दर और आवर्षक आध्या है । इस प्रकाशको भावनायें हुदय प्रधाना कांद्रिय हसनी अध्ये नहाइ नमा देनी हैं कि उसकी पाटकोंने



इस प्रगति शोज युगमें यह कह कर देंसी काला है कि " सालकों इन दी परचानते हैं और हमारे ही अन्यों या आफिलोंमें अल्य अक्षरिक रूपमें सिग्न रहा है।" परन्तु जब कोई सम्प्रदाय-भूग्य सनुत्य कर्म-जड़नामें पड़ कर अन्यतिक इस्त्याके सन्तकों छोड़ हेटता है तब उत्तका अने बनके प्रति प्रेम और दूसरे सत्तिके छोड़ हेटता है तब उत्तक्ष अने बनके प्रति प्रेम और दूसरे सत्तिके पति देग कितना यह जाता है, इसी विषयका व्यक्त अविकत्ति हमने यह प्रथल बहुत ही सारे रूपमें गिया है-अपनी आरोसे सम्बर्धा धर्मने यह प्रथल बहुत ही सारे रूपमें गिया है-अपनी आरोसे सम्बर्धा धर्मने यह प्रथल बहुत ही सारे रूपमें गिया है-अन्य हो विषयका उद्धेश कर पारित्योंको एक प्रकारी यह राष्ट स्वका कर दी गई के कि सामद्राधिक मोदन मुख्यताते को अनिष्ट परिणाव उत्तक होते दें उत्तरे पार्शिक सम्बन्धमें भीड़ स्वक पर इन्छ स्वष्टाकाण यहना

हमें सारप्तक प्रतीत होता है। हम क्यारा मुख्य यात्र मिणक है। इसे बारबुके मार्गके प्रति करश्त अनुपात है; भैर प्रयुते वो आस्त्रका प्रसा मेराड-मय मार्ग बग्हाया है उमने उमने अपना महेरव क्यांत वर दिया है। जिस समय मिणकरको यह स्थित क्याने आन्य प्रका सि सीरश्त उर्थन सम्मृति अवस्तीमें व्यत्नेसार है उम समय उसे प्रभोत दर्शनती जो स्मृतकता हुं-

अर मूर्जिल जडकी सम्प्रताल अरुशक्तको तो आनुत्ता कडी-रू १९४१ अनुत्र अनेत्रक सक्त ६ हृद्युव सक्ति इंडिक कर्म १ त. है, इस त्ययक बहु हुउ साद का सकता। स्मादेगी ५-१४ और दृद्युव स्वरूपका त्राल कही उद्यान ४४ त. इस्की इस द्वाली विकृतिक अञ्चलका



(पत्र) के साथ धारण करने हैं। इस राजको दूरना भेष हैं कि रिशादका प्रदेश सरभ नेशारकों किया और कुछ सकी महें। इसे दश मझ बादके यूनने दश बनादा भान ही नहीं है कि प्रतिकेताओं दशी परश्रार दिनने सहायक ही?

सेर परना कर राज्य कालेंगे आता क्षरण कहा जिला वि सन्ते करोर है इक्का नेतिया नेता दिखान को तथा है कि दिश करेला अर्थी करीकी अरुक्त अरोते दिशा मुख्य करी है कि गर किर्दाहण कर्मण नहिंदी केंद्रण दिखाना की वर्ष हरार को गर्भ किर्मुगर और मनुष्यामें कुछ नी नेद्र रहार को गर्भ किर्मुगर और मनुष्यामें कुछ नी नेद्र रहार को गर्भ विष्में कहा जिलाने दिखा है—

The options is very general that the prim of the capace of generating is for the purpose of processing, the however, is on a error. It processes to generate that ornative if error is the effective of error is easily former to the end of lattice generating is at a large processing of the efficient processing and processing of the end of the



जहाँ रियन व सना दे बढ़ाँ प्रेन शोमा नहीं पा सकता। प्रेमीध अधिकार और स्थान भी अहत जला है। इस कारण दम सम्मे स्ता उच्च अधिकार और सच्च स्थानके प्राप्त करनेकी अभिवास रमनी चाहिए। मनुष्य जैसे जैसे उत्पादिके गाँगरे आगे आगे बहते जाते है वैसे वेसे वे नियय-बासनासे मुक्ति छान करते हुए विश्वाद केवका अनुभव करने छनने हैं। और फिर उनके हृदयको प्रेम-मध्यनारे दिन दिन अधिकाअधिक राष्ट्र मध्य अर मणद होता जाती हैं। तनके हृदयका विषय-नामता सची मद व चह धलका पर म्बन्ध-निर्मेख हो जाना है। वेने प्रत्यों रूपिय किर अग्रमा ही मार पदार्थ हो जल है। उहे शरीय है बलीय अनुवन किर इ.इ.च. मार्नदन व सुन्ना तरा कर सहस्य । इस शहर सम्बन्धी भानन्दरी भानः अन्तर स्थाप इत्तर अस्तर यह अनुना भूनित बन रहर छ । है ३ अ । स्तर्बहा अनुपर करनेकारी

वहाँ प्रेम होता है बहाँ विषय-शानना है। स्थान नहीं होता औं

नहार के के दार कर कर कि अन की कॉन्स नहीं ग्रहनी। ऐसी तमक रकर रूप मंद्रिय श्राप्यंत नहीं प्रसा द ३ करर ह रक्त - व र अन-इका अनुवन न नग्छ नमधे स्तरत रू मत् व म भाष्यर १५ इ.स. ८ उष्टर और अंग्रीम आनग्द्रका

बनमंत्र करन करते हैं। इस अक रहा अप्यावशह अग्रिम्ड

क्षेत्र राज्याला, क इत्राहे । यह । १६ इत्र छात्राद्या आदर्श

काल लहिए। इस मुख्याचा व्याव साम्राम है। यह है कि हम

होग विपर्योते मुक्त दोकर शुद्ध आध्य-प्रेमका अनुभव करनेकी मावना रक्षें।

इस उपन्यासमें इस बातके दिखानेका भी यःन किया गया है कि उर्ष समय वीरप्रभुका समाज पर कितना प्रभाव था। वीरप्रभुके प्रमुखको देख का किर यह अधर्य नहीं रहता जो प्रमु जहाँ कहाँ प्रधारते थे वहाँ वहाँकी जनता उनकी दिव्य प्रतिभाके तेजसे क्यों चक्रचोधिया जाती । उस समय चाहे केसी ही विरोध-विदेयपूर्ण पिलिश्ति क्यों न होती, परन्तु जहाँ प्रभु उस और गये कि सथ विरोधियों हो अपने आप ही प्रसक्ते चरणोंने सिर सुकानेकी सप प्रेरणा होता यो और फिर वे अपने सब नत-मेट सम्बन्धी वैर--विरोध-को भूच जाते थे। इस सनय मा किसी किसी परन चारेत्र-शींड बहात्नाके सम्बन्धमें ऐसी ही कुछ कुछ बातें सुनी जाती हैं। तव वोरम्मु-सद्य महापुरुषोके अद्गुत प्रमायके सम्बन्धमें ते। कदना ही स्पा! समन्तमद्रके यहाँ हो विशिध्योंकी सभा मरी थी उसमें प्रमुक्ते आते ही जो पश्चिर्तन हो गया वह एक वडा ही अद्गुन दरप है। इस बुद्धि बादके युगन Spiritual force आप्यालिक बङकी जैसी चाहिए वैसी मान्यता न रहनेके कारण पेसी घटनाआर्ने छोगीकी र्तका होती है; पत्तु, वन्द्रे जानना चाहिए कि आप्पालिक बड ९क ऐसा बट है कि उहके सामने सद बड़ नि:सख दो जाते हैं। इस प्रभावका स्वरूप वे हो होग देख सकते हैं जो ईसारचके स्वरूपको सनम चुके हैं । ऐसे अनुभवने न आने गठे विषयको बुद्धि द्वारा रब्दोंने न्यास्या करना व्यर्घ है। स्विनेत्रजा (Spinoze) नामके एक तत्त्ववेच,ने बहुत ठीक कहा है - To difine Gud

करवनोमें मही जा सकता तब उत्तका प्रमान, जो स्वरूपसे उत्तक होता है, मेले करवनोमें जा सकता है। वह युन शरीर-का, और इस्त मोहे विज्ञान-कष्ट या सुद्धि-बडको समझने ज्या है, परन्त आप्ताशिमत-मध्ये सकते के जिद हो अब भी बहुत मुख्य प्रशिक्ष आप्त्रपत्रता है। आप्त-बडको सामने अप्य प्रकारि तक बढ़ अपना अमियान भूज जाते हैं, और हमी छिए शासकारीने कहा है कि बड़े बड़े राजा-महाराजा और चलकती भी अम्म-बडशाजी महामाओं में चरणेको करने मुकुटोकी प्रमास प्रदीत करते हैं। विस्ताम में ऐसे ही उच्च प्रणाने केष्ठ नहाराजा ने और इस कराण उनके दिस्य प्रमावश उपन्याशयों सेनामें एट कर जितना गान

किया जाय योदा है।





श्रीमती सुगणाबाई बड़जाते



सम्ब

वि• सं• १९६४,

मखः वि• सं• १९९५

ता॰ २१ मार्च १९६८

स्व. श्रीमती सुगणावाई

अबसेर मेरपात्रा में रूपनगढ़ मामक एक होटा-सा प्राम है। वहाँ पर श्री मजानावजी पाटनी और उनका परिवार रहता पा। उनके दो पुत्र श्री जुहारमवजी तपा ईसराजजी और दो कत्याएँ पा। उनके से एक सुगणार्था थी। श्री मजानावजी का परिवार करार में अजीवा जिले से बाधिम नामक जाम में आकर बस गया। उनके संशय आज मुजाब न्यापारी, सम्मन तथा सुखी हैं।

संभी मुगगार्श का जन्म विकाप संवत् १९११ के बास-पास हआ और विकाप संवत् १९१७ में थी. जेटमज्जी बहुमाने के साथ उनका विवाद हुआ। उनकी सिक्षा आदि के विपय में आज को भ० वर्ष पूर्व को सामाजिक स्थिति की करनता ही उत्तर दे सकती है। को मारवारी समाज, विशेषकर राजस्वान में रहनेशाला मारवारी समाज, बाज भी छी-दिन्य के विषय में रहनेशाला मारवारी समाज, बाज भी छी-दिन्य के विषय में रहना संस्थी हुए उन्होंने बना हुआ है, उसकी क्ये राजस्यी पूर्व की अस्त्या के विषय में गुड़ न बहना ही उद्युक्त है।

भी। नेरबहरी के रिता कुरानग्रहणी करने बस्तु खंबाटाहणी के साथ वर्षों में काबर बरड़े का व्यवसाय बरते हो में के मेराचीन की बात कि रिवाह के पॉब धर्म प्रवाद ही बी हिस्स की जाने का सर्वशत हो गया। अब सुनालाहर्स में विश्वस ही जाने अनके काशार्शन से विश्वीकालको का परिशं समुद्र तर्च कथा के विश्वीकालको के तीनी पुत्रों को एक पुत्री का निशाह को गया है। कथ्या शांशा कुमी निशाह कोन है। उपेश पुत्र की प्रतासक्त एक सार्वकरिक बताँ तर्चा विकसार काशिन हैं। काले पुत्र को शिव्यवद्गार है काश्मि काफी दिनस्त्रात एकी के और परिशाह को हैं देशीय करते हैं। हम के वो पुत्र कि जैनेव कुमा तर्चा कि कुमार है। मेटे पुत्र को किशानुकार एक काम की परिश्व दें

दम यही आ भा काते हैं कि आभी मामाओं भी भी मारनाओं का तथा समाजनेका, अतिकिनाका आदि गुणै चिन्नीमार में ने जिसा अवन क्या और उन्हें किस या है, उन्हें काले की दिश्या भी उनक आदर्श को ब्यान के क्योंगे

भेड-पात्रा कर चुते हैं और उनकी बड़ी पुत्रा सी. राजमी राष्ट्रीय अंदीएन में एक कार मेल हो। आई है।



स्व• पं• उदयलाल कासलीवाल





पंदितजो संस्कृत प्रत्यों के अच्छे अनुवादक वे । अरत्या से ही उन्होंने इस और कदन बहुत्या था। उनके किंग द्वर धर्मसंग्रहशावकाचार, धन्यकुमारचिति के मदवाहुचरित्र इन तीन प्रत्यों को बनास के मार्ह की जेन ने प्रकृतित दिया था। बसी समय संद्वार-निर्मा

माम की एक स्तंत्र पुस्तक भी पंदित्रजों ने किसी थी और उ भित्र काला मेंदाताहबी सराक बड़नगर बाकों ने प्रकाशित की की उसमें बीस-पर्ग्व की मान्यताओं का प्रतिपादन और तेग्बरान्व निवेध किया गया था।

चिद्दागितालां करतेगा के मात्रे में जैन माहित्य प्रमास्त कार्यां ने की मापना जै र पन्य प्रमाशन का कम जागी जिला । करतेगाँगी इस समय नीर्वेत्तत्र कमेरों में मार्गिस करते है और अवकार्य के समय इस इसे दें त्यांग्य स्वन व । रहिना जेनला प्रायस आस्त्र समय इस इसे दें त्यांग्य स्वन व । रहिना जा प्रायस कार्य समय इस से का न व । रहिना स्वाप्तिक कार्य, सहिना व

बर्ग्डमें कुछ समय रहने के बाद पंडिनमाँ ने बाद

पद्मा संपर्धतः । १. १० नामरनारः सेमियुराण, वः रे १००१ र मन्द्रामर क्या जार क्या का अनुसर और उनव १० शनरान मन्द्रश्च ज्ञा भारतः सुराग्यना क्याक्षीत् व स्मारतः न । इनवान १००० न स्मारतः नीन निर्देशः सन्मारतः इत्हर्णन्य क ००० विद्या गया भेर समुख्यमन वित्त भेर १८०० विद्या हो। सेम्परित के अनुसरित के भेर



दे दिया। इस बुंभों के मिछ जाने के कालकादेवी कोड़ पर पर बड़ी दूसात बील दी गोड़ और सम्बन्धकारण का कार्य सुंब तेथी से जारी किया गया। इसन् १९२१ तक वंदिनजोंने अपनी अब्ब माला में वच्यास, नाटक, इतिहास, अच्यान, नीनि आहि के देशे अन्य प्रकाशित किये और गॉर्स-युक्यक्र-भेटार दिन्दी का एक स्वर

मान्य प्रकाशक गिना जाने छता । पंडितको की मचाई, प्रामाजिकन और परिधमशीलता का ही यह परिणान समझना चाहिए को आनी छोटीसी जिन्दगी में हो थे इतना कर सके और इतनी रूपाति अर्जन बर गये । पंडितजी मेरे बहुत हैं। प्रिय मित्रों में वे । मुझे चारते भी वे और मानते भी खुब थे। एक ही ज्यवसाय करते हुए भी हममें कभी त्रतिस्पादी का मात्र नहीं उठा । उनकी शायद ही कोई ऐसी खिखी और प्रकाशित की गई होगी जिसमें उन्होंने मेरी सम्मनि न सी हो । बहत-सी परतकें तो मेरी प्रेरणा से ही उन्होंने लिखवार और प्रकाशित कराई थी। उनकी कोई बात मुझ से छुत्री न थी, सब बुष्ट छोजनर सामने रख देते थे । बढे ही सरल और उदार थे। सदा प्रसन्त रहते ये और जहाँतक बनता था चिन्नाओं को पास भी न फटक ने देते थे। नाटक सिनेमा देखने के बड़े शीकीन थे।

शापर हो कोई क्ताह गया हो कि वे नाटक देखने न जा पाये हो। तैसने की कटार्से पास्तन से, सटकार हिट की 'बाण-गंगा' में जबतक पानी स्द्रता बाह्य तैसने के टिये जाते से। स्थापास में



मणिमद है उन प्रमुके दर्शनसे धनदत्त सेट जैसे मकोंकी नस-नसर्में-रोम-रेन्रे

अगार आनन्द, शानित और सन्तेषका बनजाना है। उठें उस आनन्दको कम करना है। हम तो क्षणिक पिलाहिस होनेशं आनन्दके दिवा और दूसरे आनन्दको करना है। नहीं कर समेरे धनदस्त सेटका बह आनन्द श्रीकात न या-स्वार्श-सुनिस होनेवारे विशे को दिये हुए न था। हम तो इसके सम्बन्धमें केज इतना है। व्य सकते हैं। तह आनन्द अगुर्व और अञ्चिक था।

धनद्त सेठ खानस्तीने एक प्रसिद्ध थानक है। मासके कोने करें बड़े शहरोंने उनकी दूकाने बड़े और सोसी चठ रही हैं। हमके सिंग धानसीकी सारी प्रचार कर रूससे हम बानको स्तेकार करती है कि गें पूजी-मायक वर धनद्त में नीम सामित्र , उदार दानी और धर्म मा उर्ग माग्यते हो कोई निकलेगा। धनदक्ते को शासनारियिन सहांशि प्रकृते मुँदसे धर्म तमा आवश्य-सान्ध्र्यी उपदेश सुना है उससे उनके संसार-सार-तह हर्यमें एक नहीं हो माग्यनाका युक्त उदय हो उठा है। उससें

स्थिर किया है कि " फिरसे प्रचार किये गये इस पवित्र जैनधर्मकी विजय-पताका सारे संसारमें स्थायी रूपसे प्रदशना चाहिए। इसके लिए

तन-मन-धनकी चाढ़े जितनी आहति देनी पड़े उसे देनेक दिए मैं तैयार हूं। यदि नैतक्षेत्री, उजति और भवाग्ये हिए इस सुर जीवनका या धन-जन-यशका बन्दियान करना पड़ेनी उसे मैं आनर्द पुर्वेक दर मकता हूं! जिस नग्द जन सुके जैनक्षेत्रका प्रमाशन बरके उमे मारे मसाम्में फैलाना और प्राणी-माजको उसकी ठंडो हायाके नोचे आक्षय देना, अब यही एक माज मेरे हेए जीवनका

प्रभुका आगमन

महानत है। "इस प्रकार धनरचने आनी आय-साझीते महान्
प्रतिता की है। मगवान् के एक धन मरके उपदेशते धनरचका जीवन-प्रम ही पड़ट गया दे पड़ी हम यह निर्मय नहीं कर सकते कि इस जगह प्रमुक्ते अद्भुत उपदेशके माहान्यका वर्णन करें या धनरचकी आम-दुर्दिका यसोगान करें।

सहद्रप पाडकाय, जण्डा बनडार कितुन्हें किसी प्रकारका मुख प्राप्त हो तो उसे अंकेड भोगनेंगे तुम अधिक आनन्द साम कर सकोगे या अपने मित्रों एवं सुनुन्धियों के साथ भोगनेंगे ! कर्रमण करो कि तुम एक सुन्दर नाटक देखने गये, उस समय तुम्हें अंकेड देखनेंगे अधिक आनन्द निष्ठेगा, या अपने सहस सम्मववाडे प्रीमियोंके साथ बात-बात और हैंसी-विनोदंक सुनके अतुमवर्द्यक देखनेंगे ! तुम्हें आने वाले एक कोनेंगे बैठ कर मिठाई आनेमें अधिक आनन्द जान पढ़ेगा या अपने निजोंके मण्यमें बैठ कर सबके साथ प्रसकतार्द्यक सालेंगे ! समको कि तुम निमंद बाँदनीवाडी मधुर राजिमें एक सुन्दर बातमें पूम रहे हो, उस समय क्या तुखारी ऐसी इन्छा न होगी कि इस मधुर आनन्दमें माग केनेबाटा हमारा कोई निज्ञ या प्रेमी यहाँ होता तो जिल्ला अभ्डा होता !

कीन जाने ऐसा क्यों होता है ! पर मनुष्य-स्वमाद ही ऐसा है कि वह आतन्द्रके बैडवारेंने हरमता नहीं काला | धनदत्त सेठको मडावेर प्रमुके दर्शनसे को आतन्द्र हुआ या उसने उनके मनके भी यही भावना हुई कि 'धम बहुते आनन्दका अनुसब में अपने राहरके-आतो अन्तर मुस्कि अन्द्र रोगों को भी करा सहूँ ने विनना सक्ता

:





भित्र प्रत्मेतः । एकः प्रदेश प्रत्ये हुश्की प्रत्ये प्रिते चर्योक्त कर्तात्र कर्ताः प्रतिहे श्रीप्रस्तिक । एकः प्रतिहे व

पडल (के अपने हैं, प्रस्ति के प्राप्ति सकर) में ब



: २ :

दान य-कुट में देव इक्टियम्के पाम जो मनुष्य पत्र के गयाथा उसने की

राजगृह आकर यह सब हाल धनरणमे कह सुनाया 19 पह जुकते कार प्रमुने किम गनारतामे विचार किया वा और 3 समय जनकी मुद्रा केमी गानन थी; तथा चोड़ा हो देर बार कहें किस हदातके साम जलर दिया था; हस्तादि अब से इनि वर्षन र है किस धनरण सेटको सुनादी। यह बान पाटको पर विदिन कि धनरणने केसल बाग्र संधोगीको मर्यकरात्र है देश कर ही में यान्से न आनेकी प्रार्थना की थी; पर उसके हरयमें तो यहाँ को मानना थी कि प्रमु अवस्तीको पत्रिन करें। बाह्य प्रार्थना अहरी होनेने साथ अपने हरवाई प्रार्थना करी का अनेसे धनरण अस समय कितना आनन्द हुआ होगा उत्तका अनुसान हम न नहीं कर समने। धनरणने यह जान वर, कि प्रमु अद्भाव प्रमु

धनदस्य बड़े पवित्र-हरय और सच्चे मक थे, पर यह बात भी । जानेकी नहीं है कि ये वे मनुष्य । प्रमुके इस प्रकार इहताहुंग उ टे सुक्तनेके बाद भी जब ये देखते ये कि अपलतीके माह्याधि विरोदियों शा-बक दिनदिन बहता जा गहा है, उनको प्रतिकृष्ट अधिक-अधिक गर्मार होनी जा गहा है नव बहुत हो निराश जाने थे । मनुष्योंकी इटलाफ़ों मोहा होनी ही किननी है ' रे व

मही धुम-धामके साथ प्रभुके स्वागनकी तैया(। करना आरम कर दिय

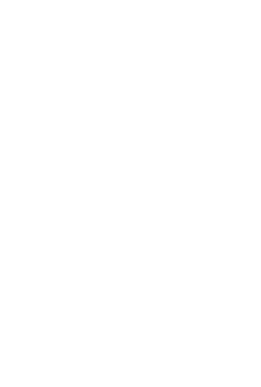
विन्ता वन दियानेका प्रयान करें; परनु मिरेशियों के बहुनी हुई संख्या और उपयों की निरंत्र होनेवानी वर्षाको देख कर उस समय हरपको वर्षाको वर्षाको वर्षाको है । जो मेरा ऐसे संपेताने की वर्षा हरना और निर्मयनाने भार छाती हो है । जो मेरा ऐसे संपेताने की वर्षा हरना और निर्मयनाने भार छाती हो कर सहे रहते हैं उन्हें सनुष्य नहीं किन्तु देय कहना चाहिए । अन्यत्त अपनी सालि-भर प्रयान करने, पर जब वे कामी-सभी वर्षा जने तथ सिर पर हाथ रज कर भागी स्थितिके सम्बन्धी विचार-मा हो जाने थे । उस समय उनक अन्ताकारणके भारति नामों कोई कहना था कि "धनदस्त, निर्मय वननः उचिन नहीं है । यह निर्मयता अनुसाले ही उपन होनी है । क्या तुर्धे प्रमुक्ते वचनों पर श्रद्धा नहीं है । जब स्वयं प्रमुक्ते ही आनेकी घोषणा को है किर नुम क्यें, घनसों हो एस सम्बंध प्रमुक्ते ही आनेकी घोषणा को है किर नुम क्यें, घनसों हो अनुक्ते ज ते ही ये सब अञ्चित्र वर्षे -प्रतिकृत्वार्थे स्थानमाने नष्ट हो आनेगी । "

ं इन डालाइ मेरे सन्दें पर विधान लाका धनदत्त कि नपे सल न्त्रीर नपे डालाइके नाप काम काने तम जाते और माजाय-समाज तिया स्तित्रमद्वी श्वनावी थोडी देरके जिए सर्वया मूल जाते। अनदत्तने मध्यानके स कामर्थ अनत्त्व धन-मण्डार खर्च वरना प्रारंभ का दिया। सर्वय-नेत्र में अपनित्र मोठियों में नपे, सुनदूर और बहुमन्य नाम साम प्रारंभ के जाते हैं स्तित्र देशा दिया।

[्]रार्थ प्रेर के प्राप्त केरीन प्रशेष के एक हैं। इसके जिस्से झगह जिसह प्रकार पर प्रकार के प्रेर्व प्रथमित करा है।

[्]यस्त्रे प्रते । प्राप्तक सम्मेरणे । राज्येक्ट हे सुक्र है के कार्यक रिक्ट रिवर्क एक्ट राज्येक्ट राज्ये





रख कर बडी मिकिसे प्रणाम किया। प्रमु उस समय शिष्य शंकाओंका समाशान कर रहे थे। प्रमुक्ती सुधा-सदश वाणी सुन श मणिमद्रश आमा एक नये ही प्रकारके शानिन-पसे द्वीपू^{त हो} रुगा। प्रमुक्ते मुल-सन्दर्स जो अमृतकुच्य उपदेशकी थार। बह सि

लगा। उसके सुन-चन्द्रस्य जो असूननुष्य उपदेशकी थार विश् भी अफित बदती गई। इस काला मितमद्र वहाँ देर तक वहीं रहा। इसके बाद जब उसने देखा कि अब रात हुई जाती है त वह अपने गृहकी और वापिस ठीटा।

पर आकर बढ़ विचारेन लगा कि मैंने जो बीर प्रमुके दर्ग किसे और उनका उपदेश सुना, मी इसे क्या विवाजी मर्पकर जवा मर्पकेंगे ' नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। बीर प्रमुक्त पीर पूर्पिके दरीन काके तो उपटा आनेको भाग्य-गाली समझने लोगे

तब नहीं जान पड़ना कि मैंने और कौनमा अपराध किया है ! हैं
प्रकार विचार करने पर भी जब यह कुछ स्थिर नहीं कर पाता है
सुरे हृदय सेनेका यन करना था, पर इसके बार ही वह अर्र वितिष्ठों समग्र कर सोचश कि यदि इस सम्बद्ध में सेने छुगा। है
तिता नवा मार्ड-बर्ग द्वारेके बरने उन्हें सुन्न पर कीज़िन होंने
यह विचार कर यह दृष्यके सार्थी इसकी ही दुखोंकी में

शने देशनाथा। रिक्रास्तर राज्यान सी। किस्तानी चुर्दशीकॉचर्टी किस्तान के किंदर राज्यास के देशकार कराईकी

िक्षमा करकी जर पर पत्रा पर्यक्ष है । आपाल महर हैंसे रक्षा कर करण के प्राप्त के प्राप्त में इस के ब्रह्म रही हैं हट

मणिभद्रका सुरकारा

मिनिम्य इस समय एक खिड़कांमेंसे अस्त होने हुए चन्द्रमाको ओर देख ग्दा है। पनैयाको मनुर आयाज या द्वाको मृदु छड़ेर उसके प्यानको न तोड़ सकी। निवार-सागरमें वह इतना मग्न हो। गया कि उसे इस बातको भो खबर नहीं रही कि यह स्वयं कहों कैसी अवस्यामें है। वह इस समय किसी गंभीर विचारमें अवस्य है; परन्तु इतना भारी विचार वह किस विष्यमें कर रहा होगा ! यह सही है कि यह उस समय भूख-प्याससे बड़ा कह पा रहा है, तो क्या यह इसी विषयके विचारोंमें मग्न हे ! नहीं। यह निचार करता है कि ये लोग इम तरह मुग्ने कब तक यन्द्र (सब्दें)। प्यासके मारे मेरा गहा सूचा जा रहा है, क्या ये लोग मुने एक कूँद्र पानी भी न देंगे ! अस्तु, पानीकी कूँद न दें नो न

सि एक बूँद पानी भी न देंगे ! अस्तु, पानीकी बूँद न दें तो न , सही; दर क्या ये मुक्ते पोगिरानको उस विश्वमोहिनी मूर्तिके दर्शन , सरनेके जिद भी न जाने देंगे ! प्यासे रह कर नर जानेकी मुक्ते , विस्ता नहीं; किन्तु एकवार प्रमुक्ते दर्शन किर भी कर जिये होते को यह मैं है मेरे जिस महान उ नवक्या हो जानी ! कोई कैसा ही , भवेक वर्श करें न है उसे प्रमुक्ते दर्शन में जुड़ा रजना — इसके समान जैसे हैं के पान करें हैं सकरी है जह , जबसे मैंन

1997年 1997年 - 1997年 - 1987年 -

मिणिसद् कर आना नर-बन्म मारूप वर्षेते । और द्वार ! उस. मन्त्र ! ह

द्क ऐसा मन्द्र-मध्य **रच**्या औ सुते ऐसा करने ही आहा ^{हर} जायगी। द्वार ! किए भरते में अग्रुज कर्य मेरे उदय आरे हैं भैने ऐसा कीनमा चीर पाप किया है कि जिसमें मेरे बिए मेरे दर्शनमें शित्र आया ! जब प्रभु सहू सहर स्वर्शन हेंगीओ प्रोरिट चारों और फैजाने हुए शहरमें प्रदेश करेंगे, बार गंबार शरी प्राणीकी मोली हुई आशाको जागृत करेंग और इन धर जन-मन के मामने सुग-सदश शानिको वर्ष करेंगे उस गमय में ही हैं पास बच रहूँगा जो पदाँ नहीं पहुँच सहूँगा । न जाने कि अपरायको मुत्रे यह ऐसी समग्रत और सहत संजा ही गई है । हैं प्रमुक्त वह सरछ और परित्र स्थादार, प्रभुक्त बह भेग-महार हें याणी, प्रमुख यह अ शैकिक संभीरता और उदास्ता मृते किर र कमा देखनेको भित्रेगी-भै किर भी उनके दर्शन कर आग्यतान् है सर्केगा ! मणिमद एक और ता इस प्रकारके विवारों में हुता सी था, दूसरी और मुख-प्यासका कड़ सहता था, और साथ ही ब्रह् च्यानमें छीन रहता या । इस प्रकार दिन-भरके केश और शेकसे हैं कर अन्तमें बद्द निदाके पश हो गया। निदाके नेगने क्षण-मार्थ डिए उमे अपने अगिन कर दिया । मणिभद्र उस समय भी स्व^द संदिमें नाना तरहकी कलानाये कर हा ता।

्रजेमें मणिमब्रेजे कार्नेच स्तन्त हुन्ता चारणहुर हा कि वि सेर्ल्डोम सह सन्दर्ज उस्ताच कार्याचन के सह प्रयान के कहाता | कुरत्तरमंचात्त स्टन्स स्तुत्स्ता संक्ष्य कुरू

मणिमद्रका पुरकारा

दरवाजेकी और दृष्टि दाल कर देखना है, कि इतनेमें कोठड़ों के क्लिक्ट सुल गये और दरवाजेमें एक स्वर्गीय सुन्दरी आकर लड़ी हो गई। यह आध्यं-चिक्त दृष्टिसे टफटकी छगाये उसकी और देखना ही रह गया।

वह सन्दर्श कीन है, इसके कड़नेका सन्दन दम नहीं पर सकते। मीनभद्रको इस सुन्दर्शके दर्शन करके ऐसा जान पडा कि अस्ता-चलेत्मक चन्द्रमाझी जो निर्मठ चाँदनी बन्द दरवाने पर पह रही यी वही अब सी-शरीर थाएण कर मेरे सामने आ लड़ी हुई है । वह सुन्दरी बाटिका थी या युवती, इसका भी निथम क'ना उस समय कठिन या । कारण उसकी बिनरी हुई, काली निविद्द केरा-धारीमें वसका चौद-सा मुन्दर मुख स्वष्ट रूपसे दिम्बई न पढ रहा या । वह र एक सरेद माडी पहने रूप थी। उसके गडेमें मीतियोंका सन्दर हार शीमा दे रहा या । मणिभद उसे प्यानपूर्वक देख कर पहचाननेका यान करता है कि इतनेमें वह स्वयं ही उसके पास आकर खडी हो गई और मणिभद्रके हार्योको अपने हार्योमें ठेकर रिनग्ब हाष्टिसे उसकी ओर देखती हुई नीरेसे बोर्डा-- "चुन रहिए, यह बोलनेका समय नहीं है। तम मुझे पहचान नहीं मकते। और न इस समय पहुचानने की जरूरत ही है। खादा देर तक बातचीत करनेका यन बतेती क इस दाला ही प्रकड़ जायेंगे। मित्रभग, सच की बही, क्या अभ की मान्यानक दर्शन करनेके उठ जाना चाहरे हो। " जान-1, जालव और उसुबताको र रण मिणमदके में इसे एक

शह मो न निकास । उसे रेमा अनुमय होन लगा कि उसकी

मणिम

प्राणोंमें-हरवमें-गहरे अन्तरहुमें मानों बड़े जोरसे विजलीका प्रवर्ग वेग दीड़ रहा है। वह उत्तर देनेके बद्छे उठ कर खड़ा हो गर्गा मुन्दरीने पहछेकी माँनि उसके हार्योको अपने हार्योमें छेका वर्ग सावधानीके साथ धीरेसे कहा कि माणिमद्र, जाओ, जितना बरी बन सके मागनेका यत्न करो । तुन्होरे पिताकी बृद्धि तो भड़ है। गई है। वह सूर्यके प्रकाशके सामने महीन बस्र लगा कर रक्षाका यान कर रहा है । तुन्हारे घरानेमें तुन्हारा विता कर्डकरून है । मेरे इस कहनेमें तुम्हें उद्धतता जान पड़े तो मुझे तुम^{्राम} करना ! ग्रम-सदश कर्मवीर, उत्सादी और उदार अवक जो वैर्न शासनको प्रमावना, बहुवारी और उन्नतिके छिए स्वार्थ स्याग करनेकी तैयार न हों तो में कहूँगी की प्रभुका जन्म और विद्वार इस प्रवीन निष्फल है। जाओ मणिमद, जाओ, में तुम्हारा न्वर्ध समय के खी हैं। यह साड़ी हो । हो देखी, सामनेके दरवाओं में होकर जानेक यल न करना, कारण मुझे भय है कि कोई विपाचि सामने आक बादी न हो जाय । इस पासके दालानमेंसे बागमें उतर कर और र्फ़्रेबी ओरका दरमजा इस तालीसे खोल कर निकल जाओ। तुम्हारे मार्गर्ने इस समय कोई निम्न बालनेवाला नहीं है । जाओ, बन सके उतनी जन्दी इस यरको छोड़ कर चडे जाओ। इस प्रकार कोर्न करते करते यह सुन्दरी मिणमदका हाथ पकड़ कर क्षे छत पर छे आर्थ । उस समय उस सुन्दरीका मुँद चाँदनीमें स्टप्ट दिखाई देखा या । मिनमदने एक बार फिर उस मुन्दर्शको पहचाननेकी कोशिश **बड़ै । उसका श**ीर रोमाचिन **हो** उठा । उसकी आँखोंमें आँस मर

मणिमद्दका सुटकारा

ापे । उसने उस झुन्दरीको ओर इटि कर कॉॅंपती हुई गवाजसे कहा—

" मुन्दरी, तुम क्या मुक्ते पहचानती हो ! तुम्हारे इस उपकारका देखा में किस तरह चुका सक्ँगा ! मुक्ते जान पड़ता है कि तुम गनवी नहीं, किन्तु देवी हो । जय ! महाबीर भगवानकी जय ! वि, मेरी यह कामना है कि तुम्हारा मनोरप पूर्ण हो । मैं अब बाता हूँ । "

" जाओ,-मिनिमद्र, जाओ; जिस मार्गि आनन्दका प्रवाह बढ हा है और जिस मार्गेने उद्देशका नाम-निशान भी नहीं है उस गर्नेम जाओ; बिस मार्गमें मेत्री-मावकी शीतल और मृदु-लहरोंका शनन्द मिछ सकता है और जिस मार्गमे चिन्ता-द्वेपकी छैरा-मात्रं ही जाटा नहीं है उस मार्गने जाजो; विस मार्गमें शनके भण्डार पुढ़े हुए पड़े हैं और जिस मार्गमें गर्व और अहंकारको जगह नहीं मुस मार्गमें साथे और निर्मय होकर जाओ; जिस मार्गमें आमायी ुफान्ति हो सकती है और बिस मार्गमें अवनिका सन्देह भी हार मिना जाना है, उस मार्गिन ससंड जागृनिके साथ विचरी: हाओ, संसारके प्रानियोंके दुःख-तार-काफो दूर वसे और जगदम ्रीतितका, दयाका और धर्मका साम्राप्य स्थातित करनेमें सहायता ी । जाओ मिनिन्द्र, सर्प महाबीर मगवान् आवर्टीन जावर पर्मका ुवित्र उपदेश कानेके जिए टोर्गोके हार हार पर जापेंगे, तुम भी ुक्तो मार्ग पर जाओ और आनाको कृतर्य करो, जनना मोछन्मुल ्राप्त करो और बगदके दुःख दूर बगनेके दिर आम-मुखका बडिदान

मधिमद

यरो । जाओ, —मणिमद, इससे अधिक में तुम्हें कुछ नहीं। सकती । बीर प्रमु तुम्हारे मार्ग-दर्शक होंगे। "

इतना कह कर धुन्दरोने मणिमदका हाय छोड़ दिया और रास्ता बतानेके डिए वह स्वयं नसैनीके रास्ते नौचे उताने हां मणिभद्र मी दिङ्म्इ हुएकी माँति उस मुन्दरीके पाँछे पीछे व छगा । देखते देखने वे दोनों नीचे उतर आपे और नागके दरा पास आवर खड़े हो गये । सुन्दरीने मणिभइके पासमे ताजी स्वयं ताला खोल दिया। बहुत ही धीरेसे उसने दरवाजेके किया है इमके बाद सुन्दरी दरवाजेकी एक ओर खिसक कर खड़ी हो। मणिभद्र दरवाजेके बाहर होनेके पहले एकवार किर मुन्दरीके चन्द्रके अवशेकनका छोम संतरण न कर सका । उसने किर देर तक उस सुन्दरांके बिखरे हुए धन-निविड काले केशों निर्मन-हिनाध-विस्तृत नेत्रीस मण्डित स्वमाव-सुन्दर मुँहको वि शाधर्य-चित्रत दृष्टिसे देखा । जाते जाते मणिमद्रने काँपती आवाजसे सुन्दरीको सक्य करके कहा-

" देवि, तुम्हारी आजाको स्थीकार कार ग्रन्हारे सताये हुए र मैं जाता हुँ, परित्त मनमें इस बातका हु, क रह जावगा कि र उपकारका बरेका में किस तरह जुका सकूँगा र उपाययो, मिल्यमें कभी ग्राहरी पतित्र गुरिके दरीकारी हरयमें प्रवक हो उठे तो क्या उसके किए कोर्र रास्ता बतलानेकी क्या करें या ये ही दर्शन कितम दरीन होंगे । "

मणिभद्रका सुरकारा

सुन्दरीने विस्मयके साथ अवना नत मस्तक करासी और उठा त मणिभन्नकी ओर देना और धीरेसे ऑक्टोंको भीचो कर बड़ी मिंग और मधुर आवाजसे कहा — 'मैं किर कर मिर्चुणी यह पूछते हैं ! मैं यह निधित तो नहीं वह सकतों कि किर मिठ सकूँगी या हों; परन्तु हृदय भीनासे विश्वास दिना रहा है कि बहुत करके मेठ सकूँगी। आगे प्रमु जाने।"

इसके याद वह मिणमद्र के उत्तरकी राह न देख कर छीट गई । मिणमद्र भी दरवा नेसे बाइर निकड कर सड़क पर पहुँच गया । हिंसे उसने अपने दिता के विशाल, नीरव गृहकी और एक नजर केंग्री, जाती हुई उस ज्योतिर्भयों सुन्दरीकी और देखा और अन्तर्मे एक छंवी सींस छेकर बड़ी शीप्रनाके साथ वह क्षाम्र-वनकी और च्छ दिया।



मणिमद

करता है उसी मौति नाना अंक्रतारोंने सबी और अबन्मीनी हैं उसी अर ज्वबता एक पोड़ती पुरतो मन्द्र मन्द्र मुझक्याती हूँ। उसी और आ रही है। इस आगना नई बुक्तीने आना एक हान सुन्देने कन्मे पर किर एका और दूसरे हापसे उसे अपने हरपमें दबा हैं बड़ी मधुलाके साथ नहा— "बहिन तुम्दारे नाहर, भैदी और उद्योगकी नितनी अने जाय उतनी हैं पोड़ी है। बहिन सनमाज, मैं सुच कहती हैं। तुम्हारे विना और किसीसे ऐसा जोखन महा कार्य नहीं हो सुन्

था। अपने घरमें अपने ही माना-पिता द्वारा केंद्र किया गया केंद्र सहज्में छुटकारा पा जाय और वह मा तुम जैसी निरी अवट हापोंसे, इसकी तो कोई शायद ही कराना कर सके ! स्लमान धवरानेकी कोई बा^ब नहीं है-मैंने जो ये सब बाने आँखोंसे देख हैं, उनके छिए डरनेकी आवश्यकता नहीं है। मैं चाहती ती हैं रोक भी सकता था; पान्तु मैंने नैमा नहीं किया, और चुपचाप ह कुछ में देखती रही। मैं क्यों नेरे इन कार्यमें नहीं पड़ी, और ह नहीं मैने इसमें बिज डाला, इन सब बार्नोक, बिस्तारके साथ कहते यह उपयुक्त समय नडी है। उस समय यहाँ पर खडे रहें ही बात चीत करना भी याग्य नती है। कारण प्रस्क दार्गीके व ¹ ठठनका समय हो रण^{्ड}ाइमका कट इस जगह दुख खेगी। ृह्मारी बडी ब्री इशा इसी । इस करण चटा हम यहाँसे ई • दुरी पर चरा चर । स्मर्क 'ट्रप्टन वड, मावशानी रखनी चा कि हमें र क्यें की किनीक रही भर में खुक्र न गई। इसके लि

आधिक बन तम जगह नहीं हो सहता।"

इस दूसरी युवतांको पहचाननेमें स्तमाटाको बुळ भी समय न गा । उसने उसे तुस्त पहचान टिया कि यह मलाह देनेवाली वर्गा समन्तमद्रके महाले पुत्र सुमद्रकी पत्ती मिनमालिनी है। पाठकों-रे यह स्मरण होगा और हम भी यह बात पहले लिख आये कि समन्तमद्रके तीन पुत्र हैं। उनमें मबसे बहेका नाम स्तमद्र हलेका सुमद्र और छोटेका मिणमद्र है। यही मिणमद्र हमारे इस-पन्यासका मुख्य पात्र है। इस कारण इसके विशेष परिचय कराने ते यहाँ ज्यस्त नहीं। समन्तमद्रके महल पुत्र सुमद्रकी स्वीका गम मिणमालिनी है। बही इस समय स्तमालाके साथ बात-चांत हर रही थे।

सलमालाको समन्त्रभदके घरमें आये अमी सिर्फ एक-दो दिन ही हुए हैं | परन्तु इतने पोड़े समयमें ही स्लमालाने देखा कि मणि. मिलिनी उसे हरवसे प्यार करती है और एक बहिनकी माँति हर तरह उसकी सार-मैंमाल रखती है । मणिमालिनीकी उपर कही गई बालें सुन कर कुनहनासे रानमालाकी औंकोस पांच अस बार्च । अंगान उसका गांच मर अस, उसने गर्मर् होकर मिलिमा निर्मान कर कुनहनासे रानमालाकी औंकोस पांच अस बार्च । अंगान उसका गांच मर अस, उसने गर्मर् होकर मिलिमा निर्मान होने कहा -

भविदेन प्रमायके । साम्बर्ग के कि जिल्लाम, पहा गुणाबायि विभिन्नों सा अने कि कि जो नाम जिल्ला है के दिवा प्राप्त की है कुला, कि विकास कार्य दें हैं। चार विकास कि स्वाप्त पहाने चारी। बहुद कार कार्य के हैं। वह जिल्लाम इस स्वीप्त निम्म कार्यन्ति के स्वार कार्याण कर के हैं। वह जिल्लाम इस स्वीप्त निम्म कार्यन्ति के

मणिमद्

करती है उसी मौति नाना अंत्रकारोंसे सजी और गाजनानिसे इस उपर उपस्ता एक पोड़ती सुनती मन्द मन्द सुनस्वानी हूर्र ठाईगी और आ रही है। इस आगता की सुन्तानि अपना एक हाय सुन्द्रिके बन्ने पर किर एक्वा और दूसरे हायसे उसे अपने हृदये दसा बन वहां मसुन्ताके माय बहा—

" बहिन तुम्होर साहम, वेर्ष और उपोगकी बितनी प्रयोग की जाय उननी ही पोड़ी है। बहिन रननाडा, में सब बहती हूँ कि तुम्होरे रिना और किमीसे ऐमा जोजब मरा कार्य नहीं हो सकता था। अपने गर्म अपने भी माना-रिना हास केर किया गणा कैरी माना-रिना हास केर किया गणा कैरी माना-रिना हास केर किया गणा जाय और वह मी तुम जैसी नित्री अवली हामीस, इमपी की कीई वायर ही बरना कर सके ! सनमाझ, प्रयानिक कोई बार ही दे-मीने जो ये सब बाने ऑसीसे देखाँ

है, उनके किए सरनेशी आवश्यकता नहीं है। मैं बाहती सो हो रेक्स मी मनती थें; परने मेंने नेसा नहीं किया, और बुरवार घर्ष बुक्क में देवनो रही। मैं क्यों तेरे उन कार्यन नहीं पही, जोत क्यों नहीं मैंने इसमें दिन साज, इन मब बनतों का दिन्तानों माय कहते ही पह उनकुष्क समय नहीं है। इन मबय बहाँ पर बहे रह से बात बीक सम्बाह भी नहीं है। इन समय बहाँ पर बहे रह से नहीं है। इनसा उनके उनके अस

बात बीक करना भी नहीं है। स्थाप प्रस्त हरोंके जा े प्रेनिक्का स्टब्स नाइ द्वा नाए तो हमारी है तो स्थाप्त ना उस पहुंचा कुछ देश देश देश स्तार स्वास्ता करिया कर्या कि निर्माण में स्टब्स हमानी

नहीं हो सम्प्र २८ इस दूसरी युवनीको पहचाननेमें रत्नमाठाको कुछ भी समय न हमा । उसने उसे तुरत पहचान लिया कि यह मलाह देनेवाली युवती समन्त्रभद्रके महले पुत्र सुभद्रकी पत्ती मिनमालिनो है। पाठको-को यह स्मरण होगा और हम भी यह बात पहले लिख आये हैं कि समन्त्रभद्रके तीन पुत्र हैं। उनमें मबसे बड़ेका नाम रत्नभद्र महालेका सुभद्र और छोटेका मिणभद्र है। यही मिणभद्र हमारे इस-उपन्यासका मुख्य पात्र है। इस कारण इसके विशेष परिचय कराने की यहाँ जुळरत नहीं। समन्त्रभद्रके महले पुत्र सुभद्रकी सीका नाम मणिमालिनी है। यहाँ इस समय रन्नमालाके साथ बात-चांत कर रही थी।

सलमाठाको समन्तभद्रके घरमें आये अमें सिर्फ एक-दो दिन ही हुए हैं। परन्तु इतने थोड़े समयमें ही स्लमाठाने देखा कि मणि. माहिनी उसे हत्यसे प्यार करती है और एक वहिनकी माँति हर तह उसकी सर्पर्समाठ रखती है। मिलमाठिनीकी करर कही गई बातें मुन कर प्रवट्ट में रजमाणाकी आँकों में पित्रम आंकुओंकी धारा वह चर्ज । असने स्वत्रम रजमाणाकी आँकोंने पत्रिम मंद्रमहू होकर मिलमाजिनों कर उसने महमहू होकर मिलमाजिनों कर उ

भविदेत प्रतास को ति जर्दी पाकिस्ता नहा गुणकायी विक्ताको सारा का साम प्रतास कर है जा प्रेम के दे देला पापकार पादिस को का का को गोल गोले चाला वहीं कहा ना पढ़ा है। जा पादका की प्रतास को बेहे स्रोम प्रकार का तकी जिल्हा हो है जा का देव सभी बहा कर

मणिमद करती है उसी मौति नाना अटकारोंने सबी और गज-गित्में हर

उपर छचकती एक पोड़गी सुबनी मन्द मन्द मुद्दम्यानी हुई उसीरें और आ रही है। इस आगना नरें सुबतीने अपना एक हाप सुन्दिरी कम्पे पर फिर रक्का और दूमरे हायसे उसे अपने हृदयमें दब बर बड़ी मसुरवाके साथ बहा----

"बहिन तुम्होर नाहम, वैर्घ और उद्योगकी जितनो प्रशंमा की जाय उतनी ही घोड़ी है । बहिन रानमान, में सच कहती हैं कि तुम्होरे विभा और किसीसे ऐमा जोवल नार कार्य नहीं हो सकत था। अपने घरमें अपने वी माना-पिता हारा केंद्र किया गया कैरी सहाम प्रशंक उद्योग हो हो से साम की सी जिरी अध्यक्ति हार्यों से इसकार या जाय और वह में तुम जैसी जिरी अध्यक्ति हार्यों से इसकार की कोई शायद ही कहरना कर सके ! स्लमाण, यहार्योगों कोई बाद नहीं है—मैंने जो वे सब बातें ऑखों से देखी है, उनके लिए हरिकी अध्यक्तिमा नहीं है। में बाहती सी हों देखें हैं सम्माण, यहार्योगों से एक सी सकता थी, इस तुम से स्वाहती सी हो है

रेक भी सकता था, परन्तु भने नसा नद्दा करा, आर जुम्बार प कुछ में देखने रही। मैं बची तेर इस कार्यों नहीं पड़ो, आर न्यों नद्दी मैंन इसमें निम्न साला, इन सब बालोको दिस्ताएके साथ कदनेशं यह उपपुक्त समय नदी है। इस समय यहाँ पर खड़े रह कर बान चीत करना भी योग्य नदी है। बारण मर्दर्स होना ते ह हमारी बद्दी हों ना हम को कोई इस जगह देख होना ते हमारी बद्दी सुरी द्वारा होंगी। इस कारण चढ़ी हम यहाँस हुठ दी पर चला चढ़े। इसके लिए हमें बची साजधानी रखनी चाईरें कि हमारे कार्यक्री किनोको स्लीमर भी म्बर न पदे । इसके लिंग इस्टिक बॉन इस जगह नहीं ही समली।"

26

इस दूसरी युवर्ताको पहचाननेमें रलमाछाको कुछ भी समय न हमा । उसने उसे तुरत पहचान टिया कि यह सछाह देनेवाछी युवर्ता समन्तमद्रके मझछे युव सुमद्रकी पत्ती मिनमाछिनी है। पाठको-को यह स्वरण होगा और हम भी यह बात पह्छे छिख आये हैं कि समन्तमद्रके तीन युव हैं। उनमें मबसे बड़ेका नाम रलमद्र महोटेका सुमद और छोटेका मिणमद है। यही मिगमद हमारे इस-उपन्यासका मुख्य पात्र है। इस कारण इसके विशेष परिचय कराने को यहाँ जुद्धरत नहीं। समन्तमद्रके महछ युव सुमद्रकी खोका नाम मिणमाछिनी है। यही इस समय रनमाछाके साथ बात-चान कर रही था।

सन्तमाहाको समन्तमद्रके घरमें आये अमें सिर्फ एक-रो दिन ही हुए हैं | परन्तु इतने घोड़े समयमें ही स्नमाहाने देखा कि मागि. मागिनी उसे हर्ससे प्यार करती है और एक बहिनकी मानि हर रहि उसकी सार-मेंमाज रखती है । मिनमाहिनीकी उपर बही गई याने सुन कर कुनहतासे राजमाहाजी औं मोसे पित्र ऑसुओं बारा हर खती | आवेगने उसका गला भर आया, उसने गर्गर् होकर मिनमाहिनीने करा-

भवदित समा करे। मैं चाहती थे कि अपना पर गुत कार्य विक्षांकों न जारने हुँगी, सर जान पहला है कि देवी गति कोई हुम्मा हो द्रकार शाहर है। यो विदेश, मेरे सपन-पुरने चले। यहाँ कोई हुम्मा रही है। यहाँ एका को हम मुद्दे मनसे सानिकों सार साव-चीर कर स्केटी में दुष्टिंग न आवश्यानिकों इन हर





: 4:

पुर प्रवेश

उद्दान पूर्णिमा है। सबेरा हो चुका है। पूर्ण तेजसे प्रकाशित सूर्यने मानों बार प्रमुखा स्वागत करनेके लिए आज नपा

थेश धारण किया है । चह-चहाने हुए पश्चीगण मानों प्रमुकी स्तृति पड़नेको उक्किप्टत हो रहे हैं। यावस्त्रीके निवासियोंने पहले की बार सूर्यका उदय देखा है और पश्चियोंका कलस्य मी खुब सुना है। पत्नु आज वे उस पुरानेपनमें एक नया ही प्रकाश देख रहे हैं। आज प्रकृतिने उनके सामने कोई नया ही रूप धारण किया है। प्रकृति देवीने जो आज तक अपने आनन्द और शान्तिके मण्डारीके बन्द कर रक्षा था वे भण्डार श्रावस्त्रीके जन-समाजके भाग्यसे आव अनायाम सुक पढ़े हैं । यह समाचार चारों ओर फैल चुका है वि वित्र धर्म-साधाःयके स्थापक वीर प्रभु अपनी शिष्य-मण्डलांके साप आज इस नगरीमें प्रवेश करनेवाले हैं, और उनकी चरण-धुलिसे यह हवान एक महान नीर्यस्य बननेवाला है । सर्वत्र यह साम हो 😘 हे कि मनुष्य-पदा-पक्षी आदि सबकी आराजरें मानों इसी एव समानाको नान उठ की है।

हैक समय पर पि अनन आपन्तीन करण विद्या । उस समय राज्यों अभिनेत्रे दिख्यता आर्थान नरा अर्थान है है। राज्या राज्येत नुस्ति । अर्थान नरा अर्थान वा राज्येत्रे स्वाप्ति मार्थित सम्बद्धि वर्षानित साहस्त्रास्त्रीकी



पुर-प्रयेश मतुष्य-समाजवें भी यदि कोई ऐसा ही नियम होना कि उरार्थ मतुष्यके प्रति मति-नात ही सबना दोनोंके प्रति दया ही ^{बरत}

और तटस्य पुरुपोंके प्रति उदमीनता करना, अर्थात राग-देपके का

णोंके न होने पर राग-द्रेप न किये जाते तो इस ससारमें जो दि प्रतिदिन नथे नथे निवित्र दृश्य हमारे देखनेमें आते हैं उन्हें हमा देख सकते । कोई यह पूउना चाहे कि महाबीर प्रमुने समस्तमदर देशा भ्या विगादा वा कि जिसके कारण उसे प्रभुके साथ सिरी या शाप्ता रहनी परी, लाइसरा उत्तर इस अपर दे चके हैं। औ रह यही कि समार गणित शक्त नवा है। है। यह कहनेका मार्थ नहां इर सक्ष्म कि उनाउ ना ही केल होता। पूर्वता अ तरम-तरम-तर्भ कारा ६ ६६६८० चर्च संस्था गणित-शर्भ मुर्भातिक सर्गर भगरतार इ∏ स्म. समझमानो ≸ केटन क्रमार प्रकार गला पर र जाइ जा अस्ता है च्छानमामा प्रवास रहा उत्तर हो। अपने म संबद लगी । संबन्धी ३३ व्या १४ व्या स्थापन १३<mark>१</mark> CARCALANCE COACE - FIRST H/H (* * * * · * · * · * · * 5 * / I/M) प्राप्त स्थापन स्थापन । स्थापन हर्न कर, इसर्गर रहर अलग मेर्ग राज्य बहु प्र रेस के बचल १ र नक्षण मनाविक स्वर प्रतिवास व क्रम १ कर रूप संग्रहर लाइस[्]हत्य अवत्रक से उत्तर कृत्य - 4 11 14 14-44 4 5 50 44 44 Bt 6:44

प्राथिधद्र

रभी भैन नहीं पड़नेका । " उसने नाना प्रयाप्त सर्वनितर्भ बर्का देगा; परन्तु उसे किसी दर सम्बेट कानेका कीई करण न दिन्तर्भ हिंगा। उसने उसने पर्श्व स्वव छोगोंको सुरा कर उसने प्रश्न संव छोगोंको सुरा कर उसने प्रश्न की जिनने नीवर पाका थे उन सर पर यहाँ कर्या की नहीं; किन्तु किसी के बात उसे सम्बोद-जनक उत्तर न भिणा; इनना ही नहीं; किन्तु किसी के बहनें में इननी। भी उसे निवस्ता न दिन्तर्भ दी जिससे उस पर सम्बेट नक भी दिया जाता। सबके मुँद पर स्वष्ट भाव दिन्तर्भ पर होगों पढ़ रहा पाकि मणिभद्रके भाग जानेसे वे सब एक ही सी वे आप्तर्यमें इन रहे हैं। अन्तर्में निरास होकर समन्त्रभदने उन सबकी विदा कर दिया।

नीका-चाहर जब समलाभरेके धरमे बाहर हुए तब उनमें नीचे विश्वी बात-चीत होने लगें। एक तब कारके पहरेदारने उन सबके। खड़ बार बहुन बंदने बाहन कार किया, मानों बोई दूसरा उनकी नोचेका ने मूल हैं के दूसरा उनकी नोचेका ने मूल हैं के दूसरा उनकी नोचेका ने मूल हैं के दूसरा उनकी हैं कर हैं के दूसरा उनकी कर कोई मानेगा। किया है के दूसरा उनकी हैं के दूसरा वाल के कर हैं के दूसरा वाल के कर है के दूसरा वाल के द

मनुष्य-समाजमें भी यदि कोई ऐसा ही नियम होना कि उपकी मनुष्यके प्रति मनिस्मान ही रखना दोनोंके प्रति दया हो करना और तटस्य पुरुपोंके प्रति उदसीनता करना, अर्थाद् राम-देगके कर-गौके न होने पर राम-देप न किये जाते तो इस संसारण जो दिन प्रतिदिन नथे नथे शियम दश्य हमारे दिनमें अने हैं उन्हें हमारे देख सकते। कोई यह इट्टाना चाहे कि महाबंध प्रमुने समस्ताक्या हेमा क्या विगादा या कि निसको करना उसे प्रमुक्ते साथ सिधे

देख सकते। कोई यह घूउना चाहे कि महाबीर प्रमुने समनतदार ऐसा क्या क्यादा या कि विसक्षे कारण उसे प्रमुक्ते साथ तिरोर या शतुना करनी पड़ी, तो इसका उत्तर हम उत्तर दे चुके हैं; की यह यही कि संसार गणित शास्त्र नहीं है। हम यह कहनेका साथन नहीं यह सखते कि ऐसा हो तत्र हो ऐसा होगा। पूर्वमब अर्थ

जनम-बनमानसके कारणींका पूर्वज्ञाल करके संशासको गणिन-गार सहस्र सिद्ध कर देना हमारा काम नहीं है। हमारी समझमें नी ह कटिन प्रश्नको जिकालदशी-संग्रिके लिए ही छोड़ देना अच्छा है बुदा समन्तम्ब विजैते पर्स उठना ही चाहता था कि इतने

मिलाइके माग जाने के मागायार उसके कालों तक पहुँच गये। उर् मुत्र कर अभिमानी गुँव सम्मन्यव्या कि एक्ट्स बहुक उठा सिरक्षे याँन नक नोश्वी भाग प्रदीन है। उठा। उसकी आँखों मानकी विकासीयों निकारने उन्हों। उसने क्ट्रा-अमीनाइ नाई कर्द या, उसे निकाल कर किसने भागा दिया। भी ऐसे बहे पूर्व क्रीत ठेमा विकासायी-चारी-काम मागुण वे तिसमें अपने प्राणीय मोग छोड़ कर देमा विकास माइस किया। वहना की उस दुष्ट्व उस उसा क्या वर उसे शिवर साम न दे देशा सब नक भी हृद्दाव



पुरन्त्रवेश

दूसरी एक बूरी छीने कहा कि " हाँ, हाँ, हसमें नी कर हैं। मही है। मिनन दीवनेंसे तो एक उड़का-मा नान पड़ता है, हो बह किसी क्षेत्र गुरुवा केटा नहीं है। न जाने उसने हैं हैं एक्ति पड़ दार्थी हैं और न जाने किनने मंत्र-रंग साथ दिने हैं हैं तुम नहीं देखने दे कि वह दिन घर चाही में केटा रहता था। हैं रंग तो इस परसे यह सोच ने दे कि नेवारेकी माँ हाउ ही को हैं इस कारण उसे वहां दुब होना होगा। पर यह सब तो उनां बहानेवाजी थी। हच बात तो यह है कि यह सोरे दिन देणी-देवारें की साधना ही निया करता था। उसकी ही यदि देणी-देवारें

तीसरे एक केड अक्षडने कहा- "यह टीम है, यह में तो रि भागको नहीं मान सहता कि मणिनदको कोई महानके बाहर के गया। तुम मानो या न मानो, यह में कई देता हूँ कि मणिनद दुव्यं जगह बही नहीं गया है। किन्तु यह जो मंत्रन्तत्र जातना या उत्तं बलसे उस कोठभेकी दोवालमें ही साग बैठा है। यह हम लोगोंके देख सकता है, यह हम उसे नहीं देख सहते। "

सहायता न देंगे तो किमकी देंगे ! "

धीरे धीरे ये सब बाने समन्त्रभदके कानों तक पहुँच गाँँ। र बह साधारण मनुष्योके जैमा बानोका कथा नहीं था। उसने निधां कर विवा या कि लोग सीमान्द्रके सम्बन्धमें बाहे जो कुछ बहुँ, ए हनना तो सन है कि बहु भेरे नास्त्र-नास्त्र या एको लोगोर्ड सनुष्याका विना कसी हुट नहीं सकता। सूत्र ने इसी बानो जानते



कर इन्हें भी बड़ा ही कट इक्षा । तिसके यहाँ ये पाइने होत रहे हैं उसके यहाँ एकाएक इस प्रकार दाठण दीक छाया इक देख कर इनका पित्त भी अभिय हो उटा । इसके भिता स्वाइको यह भी सुना कि "यह जो सुन्दर छड़की आकर रही है, वह वहें ही बाज़ाक जान पहनी है, वहीं इसीने तो भीगमदको न मणे दिया हो ! " एक दासीके सुँहसे जवानक इन दान्दीको सुन वा

रनमाजाओ जान पड़ा कि छोगोंका मुन पर बहम है और उनके वह बहम बहुता हो जाना है। उसमें सोचा कि ऐमी स्विनेत पर कहना जीवत नहीं। एकान्तमें उसमें इस बात पर बहा निवर्श किया। दिनने वह किया जिल्हा में उसमें सच्चा किया जिलानिकी हों। महत्र बहु के प्राप्त किया। दिन वह वा दिस आप उसमें उसमें पात आफ पर और बाहें पा दिस बात्य उसमें उसमें पात आफ प्राप्त छेना जीवन समझ। एकत्य उसमें इस्टा समल्वम्पर वरसे मात जानेकी भी हुई; सस्तु बई अनिवार्य कारणींके कार

लोग रूममालाको हो सन्देहको निगाइने देख रहे थे। अल्लेम बदी बनुपर्द कोए कटिनाईमे राममाला मंध्यमालिको जाकर निहा और माहासे उतना आर्ती माहा दशा उसे कह सुपर्दी राममालाको देसी नेदरा (रिकार्न देखा कर महिमादिन) भी वर्षा उदी। उपने वह रहिमान केरे और माइम स्वरूप कहा। इसके स्वरूप अमेन रामालाकी

कहा कि घेदन, इसा, आ तां.नम प्रवायहाँ मता आला! ^क सकेट वंगेस्क दं, स्ट्रास्थ आंजाऊँगी≀उस समय निश्चित

उसे अपनी वह इच्छा मनकी मनमें दबा देनी पड़ी। घरके स



ः६ः पश्चिम

उद्भारमें पूर्णिमाका चन्द्रमा कीमा दे रहा है। स्व चाँदनीमें सारा ब्रह्माण्ड स्नान कर रहा है । शीनड स्निष्य बायु माना सरहके कुलोकी सुगरन प्रदण वर गृहींकी हैं कियों, दरवाजों और शरीलोंमें होक्स दिन्-दिनन्तमं कैलनेका व बार रहा है । माड निजार्ननमा नर-नारियोंको जास्तिमें कीई व न पहुँचे, इसके किए प्रकृति देवी भी आजा कान न्यचार है किये जा रही है। दिन-भरके अदेग, मण, शोह, उत्पदना वीत्रपके कारण यही हुई आहरती इस उपाल-हिनाव चौदे म य वेशी जान पदनी है मानों उसने आस्मा-जनमें स्नान एक सफेद साथी पहनती है। इस समय बोर्ड आवस्ताकी हते चर कर पार्री और देखे तो उसे श्रायमी सचमन हो एक घोरिने कान परेगी । उसकी उस शास्त समारि और कीन-सहानक िहाला है देन समय सारा जाता विदादेन या गर्न मार्थ के के किस का किस का किस के कि किस के क े के ी-वेरभमय कार हर अन्त हा गया है। 🦮 🔉 😕 द्धारत जीर देवन १०३२ चेर अस्त भाग । . . . : A 4.44 4 114 1

त हि च त इस्टेन्डिंग मुल्लास क्रमा द्वारा है हि। है। इन्हेन्ड

Vone feiteren fice pun eine gieben feite pie per in geben feite bereite beite bereite beite bereite beite bereite beite beite bereite beite beit

The field in the property of the big of the



प रिचय

उन्हें कारामें शुक्रिनाका चारमा शोभा हे रहा है। स्वरूप्तें विस्तिमें सारा करायह स्तान कर रहा है। शोनतन्त्री निर्माण पात्र नात तरहा है। शोनतन्त्री निर्माण पात्र नात तरहा हूँ गुर्जाकों सुगन्य प्रदेश कर गुड़ियों कि किया स्वरूप्त के स्वर

बद बर चारों और देखे तो उसे आवस्ती सचमुच हो एक योगिनी-र्स

जान पहेंगी। उसकी उस बालन समावि और सीन-साध्यक हुँ दिकाना है। सर मनय मारा जगत निज्ञाने देश पर गोर्डे सानित जैर सुक्का हुँगे जानर भीन खार है। दिनका राजें देश सानित जैर सुक्का हुँगे जानर भीन खार है। दिनका राजें देश पर्याप्त के जान है। तो के जुला मार्स का जी दूरना, राजरा और अपरे अर्थ के जुला मार्स का जी दूरना, राजरा और अपरे अर्थ के जुला मार्स का जी दूरना, राजरा और अपरे अर्थ के जुला मार्स का जी दूरना, राजरा और अपरे अर्थ के जुला मार्स का जी दूरना, राजरा और अर्थ के जुला के जिल्ला का जिल्ला का जिल्ला का जिल्ला का जी स्थाप के जिल्ला का जी स्थाप का ज

परिचय

या आहमवा नामर्निशाम नहीं । आहेगा और आहावाके वाहण उससे हृदयमें पुमूछ युद्ध मंत्र रहा है । उससे उसुस नेजोंको देख बर जान पड़ना है कि वह निसीधी आने भी बाट बीह रही है: रहन्तु उसे कीई बड़ीसे आता हुआ दिखाई नहीं पड़ता । बब पाड़काण, उससी विचार-ममाविक मंग बातनेका हमें भी बोई अवि-वाह नहीं है । उसे इसी दहामें बैठे रहने दीजिए; और आहण, हम इस बीचमें उससे गत-जीवन पर एक हाँड बाज के ।

र नमाजा एक अन्दे धनी गृहस्थको छहका है। उसके विताका नाम बमुन्ति है। बमुन्ति कोशाम्यका एक प्रधान व्यापारी और समावका नेता समझा जाता है। उसके रनमाजके सिया और कोई सम्तान नहीं है। रनमाजकी प्रेममयी जननी उसे बाउपने हो छोड़ कर स्वर्ग सिवार गई है। बमुन्तिका रनमाजा पर प्राणोंसे भी बट्ट कर स्वर्ग सिवार गई है। वमुन्तिका रनमाजा पर प्राणोंसे भी बट्ट कर स्वर्ग है। कुछ समे सम्बन्धियोंने बमुन्तिसे दूसरी बार स्वाह करनेके छिए बड़ा ही आग्रह किया; परन्तु उसने इस मवसे, कि सावद सीकेडी माताके द्वारा रनमाजको दुख उद्याना पड़े, फिर प्याह करना उचित्र नहीं समझा। रनमाजको बमुन्तिने बड़े छाड़- प्रारसे पाला है। बसुन्ति अपनी प्यारी कन्याकी सारी आशानुष्छा और प्राप्तांच मटा पूर्ण करनेके छिए नेवार रहता है। सोक और दुखको स्वाहण्य रनमाजके कोम द सर्गको अब तक नहीं छ सकी है। किया प्राप्त के प्राप्त के

प्रमान १९०० ते १९८८ ते ते हैं। उस समय प्रमान १९०० ते १९८८ ते ते हैं। उस समय गम और प्राचीन प्रन्थों द्वारा उसे बहुत कुछ नया-पुराना वानने तथा मनन करनेको मिणा या । जैन-साधुओंके पत्रित्र और प्रमानकाडी उपदेशसे उसका हृदय भक्ति और धार्मिक भात्रोंसे वडा कोमछ बन गया था।संसारके स्वस्त्य और मानव-जीवनकी सफलताके सम्बन्धने उक्तने नाना तरहके उपदेशोंको सना । उन्हें सन कर वह वैठ न

रही थी। उनके प्रभावसे उसके हृदयमें श्रेष्ठ नर-जन्म और श्रेष्ठ धर्मके सक्तल करनेकी भावनायें दिन दिन हुद होती जाती थी।

मणिभट

र नमाजाको उम्र इस समय सोलह वर्षकी है. परम्तु उसका कोमल हृदय अभीत समार-विरक्ति और मैत्री-भावनामे इतना अविह रॅंग गया है कि वसुभूतिको उसके मविष्यसके सम्बन्धमें अनेक ^{कर} चिन्ता करनी पढती है । एक बार स इस करके ब<u>स</u>भतिने स्नमाडाते न्याह करनेका प्रस्ताव किया । असने सन्तान-प्रेमके बदा हो उने धन-दोळत और मान-मर्यादाका बहुत कुछ लोभ दित्वा कर व्याद्ध^{के} डिए बडा आग्रड किया, परन्तु स्नमान्त्राने किमी प्रकारके संकीव

और अभिमानके बिना विताको जता दिया कि " विताजो, आउकी आदाको मानना मेरा सबसे पहला कर्तस्य है, परन्तु कौन जाने पर इदय क्यों एक ऐसे आकर्षणके इत्या विश्वकर अलक्ष्य मार्ग पर बा रहा है कि जिसस ध्य'ड करके भोग विकासमें जी कि विकास सुर्वे रुचनान्हीं। यह सी । असादि काल स्टब्स स्टब्स से स्वाहर लगी

रहा है, उस असला चकर मने एक चकर यदि द्यायम और असि इनक डिडमा कर यि जयाना क्या कडि चुर्या द्वारी

परिचय

निरोप कटले बरान्यको आवाज सुन कर उसका सिर वृत्त गया। पर बात इम पहले ही लिख आये हैं कि बसुभूतिका हदय पुत्रिके प्रेमने अभिभूत हो रहा या—बह उसके लिए सब कुछ भूल गया या; और पही करण है कि रचमालाकी बातोंको सुन कर आज उसकी यह दशा हो गई।

बसुमृतिने सीचा कि इसे अब म्याइके डिए कुछ कहना सुनना व्यर्थ है । उसके क्ये हरपमें वैराम्य-भावनाके जो संस्कार खूब हर वन चुते है उनके उबाद फेंक्रनेका प्रयत्न किया जायगा तो उससे इने बहुत कर पहुँचेगा। इसके डिए तो अब सबसे अच्छा पही उराय है कि इने अंत इनकी नानोकों साथ टेकर कोई पात्रा की वाय । पात्राने सत्तारकी और भोड़ देहा करनेवाली नाना तरहकी हुन्दर हुन्दर मोग-विवाहको बलुके और मनोहर राहरोंकी शोभाको देख का स्वयं प्रकृति ही इसके हृदयमें न्याइकी प्रेरणा करेगी। स्वेकि क्ये संस्कार इस वासन्दिन्दर्ग संसारके समागमने आकर किर अविक समय तक नहीं द्वार सकते । इन प्रकार स्थिर विचार करके महरूति अस्तै। मास और र नमात्राह्य वेदर तीर्द-याबाहे जिए बड दिया। रक्तेने अनक ने दें की याज करते हर वे लोग एक दिन भारती जारू रहेव। बन्दर - जेर समलक्ष्यको पारण-मध्यक्षे बर्ग दिनो के अपने पा असारमा के प्राप्तनीये अनेका लेके बराह र र र पहले में इसे हैं। र रहे रहे के बंद प्रदेश के के साथ नहीं पुरुषक अवस्थान हो। भनुसुरक पार का राज्य एक रहा होते हैं

तथा मनन करनेको मित्रा था। जैन साहुओं ६ विकि और ब्रमीवशः ग्रे उपदेशसे उसका हृदय मन्ति और आर्थिक मार्शेन वहा क्री^{मत कर} गया या । संसारके रुश्या और मानव-ओहन ही सफाउताके सम्बन्धें उसने नाना तरहके उपदेशों से सुना । उन्हें सुन कर वह वैठ व रही थी। उनके प्रभावमें उसके हृदयमें श्रेष्ट ना-जन्म और श्रेष्ट धर्मके सवाल कानेको भावनाये दिन दिन हुई हाती जाती थे।

रनमात्राका वस्र ६० समय सोल्ड वर्षकी है. परन्तु उत्तक्ष

4141412 गम और प्राचीन धन्यों द्वारा उसे बहुत कुछ नयान्युराना जानी

कोमल हृदय अभीसे समार-विश्कि और मेथी-भारतामे इतना अस्टि रँग गया है कि बसुभूतिको उसके मिथ्यतको सम्बन्धने अनेक बर चिन्ता करनी पडती है । एक बार स हम करक वस मतिने लगाउनै स्याह वसनेका प्रस्ताव किया । उसने सन्तान-प्रेमके बदा हो उने धन-दीवन और मान-मयांदाका बहुन कुठ कोम दिवा कर स्याहर्क बिए बडा आग्रह किया, परन्तु रत्नमाजाने किसी प्रकारके सकें

और अभिमानक विना विताको जता दिया कि " विताजो, आर्कि आहाको मानना मेश सबसे पहला क्ट्रांब्य है, रान्तु ग्रीन जाने वर हृद्य क्यों एक वेसे आर्मार्यणके इता विचकत अन्त्य मार्ग पर वा रहा है कि जिससे व्याह करक भोग विश्वासमें जो न विवास ही रूचता नहीं। यह जीय अनादि काउने इस स्वन्यतम चन्नर उसे

रहा है, उस असरत चक्रोसिंस एक चक्रर नदि इपायम और आमि

द्विन र डिल्ड समाकर दिया जाय नाक्याकत बुराहे द्वामा "

रजनाणकी वजीको प्रमुखीय बहुत दूर एक संसूत सका स्वी^{क्रक} 43

परिचय

िरोंप व.ए.सं नराग्यको आजाज मुन कर उसका सिर वृन गया।
पह बात हम पदले दी जिछ आये हैं कि बसुभूतिका हृदय पुत्रिके
प्रेमेने अभिभूत हो रहा था—वह उसके लिए सब कुछ भूछ गया
धा; और पही करण है कि एनमालाकी बातोंको सुन कर आज

बसुमृतिने सीचा कि इसे अब न्याहके टिए कुछ कहना सुनना व्यर्थ है । उसके क्ये हृदयमें वैराग्य-भावनाके जो संस्कार लूब हुद जम चुके है उनके उबाद फेंकनेका प्रयत्न किया जायगा तो उससे इसे बहुत कड़ पहुँचेगा। इसके लिए तो अब सबसे अब्हा यही उराय है कि इने और इसकी नानोको साथ लेकर कोई यात्रा की जाय । यात्राने ससारकी ओर मोड ौदा करनेवाली नाना तरहकी तुन्दर तुन्दर भोग-विटासकी वस्तुओं और मनोहर शहरोंकी शोभाको देख कर स्वयं प्रकृति ही इसके हृदयमें न्याइको प्रेरणा करेगी। क्येंकि कमें संस्कार इस आसक्ति-पूर्ग संसारके समागमने आकर फिर अविक समय तक नहीं रहर सकते । इस प्रकार स्थिर विचार करके वसुनृति अपनी सास और स्वमालाको लेका तीर्य-पात्राके लिए चल दिया। सस्तेमें अनेक नीमेंकी यात्राकाने हर वे छोग एक दिन श्रावस्त्री आकर रहेंचे । बसुमृति और समन्तमदकी व्यारार-सम्बन्धीन बहुत दिनोंकी भिवतः ये । समन्त्रभद्रको बसुमतिके प्रावस्तिमें आनेकी खबर मिलने हो बहान्यां जाकर उसे आपने घर पर लिया लाया और बडे अदरम्भ कारके साथ उसके अनुसूतिकी आवस्मात की । वसमानेके अंग्यामें अंग्यामें स्कृति है दिन हुए होंगे कि

मणिभद

इतनंमें कोशान्योंने कोई पेने करती क्षमाचार आप कि किसने व जाबार होबर उसी समय कीशान्ती चला जाना पड़ा। यह आ सास तथा सनमाजसे यह यह यह, कि में बहीना काम 20 बहुत दीस आवार्जना, उन्हें बही छोड़ गया।

परन्तु आज इस देखते हैं कि सनमाळाको समन्तभद्रके दार्मे कर एक क्षण-भर भी चिताना एक भयकर युग जैमा माइम दे है। शत्रिका प्रथम पहर बीत चुका और इसरा पहर भी जान प है बहुत शीप्र पूरा होना चाहता है। अब तक भी सनमाव आँखोमें निदाकी सुमारी या आउसका चिह्न नहीं दिखाई पड़ वह बिड्कीमें बैठ कर चन्द्रमाकी ओर एकटक लगाये देख ध और इस बातकी खोज कर रही है कि मुझ गभीर विचार-सा बहती हुईके छिए कही नाव या किनारेका ठिकाना है या नह वीच बीच चींक कर वह यह भी बड़ी उत्सुकताके साप दे नाती है कि पोटेसे किसोंके पाँगोंकी आवाज तो नहीं सुनाई प है। उसके शयन-गृहका दरवाजा आधा खुळा हुआ था। उ चींक कर पीछे दरवानेकी ओर दूर तक मजर दौडा कर दे परन्तु उसे कोई दिखाई न देनेके कारण यह फिर विचार-अम

मिँड्गी। तो क्या यह अपनी प्रतिज्ञाको भूछ गई 'नडी ऐसा हो सकता। उसीने तो सुक्षे दरवाजा खुळा रख कर बेटनेको है। जान पडना है कोई भारी काम उस पर आ पडा होगा,

सोचने छगी कि अब तक गणिमाछिनी क्यों नहीं आई ! उसने यचन दिया या कि मैं रातको किसी न किसी तरह तुहसे अ र आपे दिना यह कभी नहीं रह सबसी । इस प्रकार रन्नमात्राके इपका बेग व्यो व्यो प्रवज्ञ होता गया त्यों त्यों साति भी आधिक उधिक गंभीर और दरममीन्सी होती गई । इतनेमें किमोके ग्रेमेक सारेसे दरबांबेकी कियाड़ सुज्ञ गये । रनमात्राने चड़ी उन्हरताके सप दरबांबेकी बोर देखा । पर यह दया 'यह निजमादिनों तो नहीं शन पड़ती । यह तो कोई पुरुष दिखाँग दे रहा है । सनमात्रा मय केर उक्तीत मनने एकदम उठ बैठी और मयसे कौरती ही समावमें उसने उन आनेवाडेसे इड़ा—"तम कौन हो ! "

आगन्तक उसका हुछ उसर न देकर भीरे भीरे आगे बहुने लगा। इनकी इन कृष्टमासे सम्माजा पहले तो बड़ा घबराई; पर जैसे ही ग्रेट पुरूप रणनालाके पास आकर खड़ा हुआ कि उसने इदयके सब बणको इन्द्वा करके बड़ी हिम्मनके साथ कहा कि — " सावधान ! पाद रखना कि वहाँसे जो एक पैर भी आगे बड़े तो तुम्हारे लिए अपने मानको स्था करना कटिन हो जायगा ' तुम-सहरा कुण्यान् पुषाओंको ऐसे एकान्त-निर्वेन स्थानमें किसी अपिटिन अतिपि-बन्याके सायन-गृहमें पुसना क्या उचित है। जाओ, तुम्हें यदि अपने प्राम, आने कटिन और अपनी कुळ-मर्याग प्रिय है तो वहाँसे उजने

रानमाज्ञक्का इस प्रकार तेवस्त्री और गवेन्द्रमी आवाब सुन कर वह दुरा अगामाजे किए जुएचाए वह सदारह गया । उनने जोरे बहनेवें परा बहुत प्रयास विचा सरह स्वयन्त्रक सरीकी

देश बीट बाओ । "

मणिभद्र मौति उससे एक पैर मी आगे न बढ़ा गया । उसे जान पड़ा ि

उसका साध शरीर शिविजन्सा हो गया है। धनमावाकी इस तीज मसिनाको सुन कर भी यह न नो वहीं वीट दी गया और न कुछ बोटा हो। उसकी यह पूटना देख धनमाडा और अधिक कोचिन होकर बोटी—"तुम कीन हों

जबाब क्यों नहीं देते ? यही पर खड़े रह कर बतडाओं कि या किस लिए आये हो ≀"

निता (च्यू आप हा?"
स्त्त्रमाञ्जास नेमीर, तीज और बहुती हुई आधाज सुन व उसने सोध्य कि जो आस-मासके छोग जम उहुने तो केरी बा अवशीर्ति-निन्दा-सुर्वाह होगी। इससे बहु बहुन हो बसाया उसे अपने दुट आश्य पर श्रम-भर के छिए पसायामा भी हुजा अन्तर्भ उसने बशे नजताक साथ धौरसे बहा —"स्त्रमाण

क्षमा करो, में मिणमाविनीका स्वामी सुभद्र हूँ। " राजमाळाने कहा—"उम मिणमाळिनीके स्वामी हो ! अच्छा, ऐसी गमीर रातमें मेरे एकान्त शवन गृहमें तुःहारे आनेका क्या

कारण है : क्या मिशमालिकोंने तुमको मेजा है : '' सुभद्रने दरने दरने काँगनी हुई आवाजसे कहा — "अध्य समझ खो कि मिशमालिकोंने हो मुझे यहाँ मेजा है : ''

रुपता जा का भागभावताना हो। मुझे यही भेजा है। ए रुपमाजाने मुज्यको आय जायर में उसके बहुवको पाय-प्रासानाकी उमझ दिया। उसे इस भावके स्थित कर लेनेने कुछ भी समय ने हमा कि वह मणिमारिनांका झहानास ८८१ है। सोस ऐसल्डा हों। कि वह मणिमारिनांका झहानास ८८१ है। सोस ऐसल्डा हों। किरस्कारने उसका सिंग सध्य हो। इहम्य यक्कते लगा।

9 4



मणिभद्र भरी आवाजसे गर्जनर कहा-" ओ कुलकर्तक ! कामान्ध-ग्राक इस जगह खड़ा रह कर मुझे और भेरे शयन-गृहको अपवित-करं

क्तित न बना ! में तुझ जैसे खान-वृत्ति वाले नराधगाँक साथ अविष बोलका नहीं चाहती ! इसलिए या तो तू खय इस धाने वाह हो जा, नहीं तो में स्वयं तुबे धके दे निकाल बाहर करूँगी। वनुः भ्तिकी करणा यदि तुत्र जैसे कामी दूराचारीकी सजा देनेके जिए इतना बळ अपनेमें न रखनी होती तो ऐसे भरे घरमें उसे एक रावि भी वितानी कठिन पड़ जाता ! " गर्विकी-तेजस्विकी और ब्रह्मचारिकी राजनाठाकी ऑखोंसे निक लती हुई अग्नि-अवाला-सदश किरणोंके तेजको समद्र अभिक स^{द्}व तक न सह सका। सुभद्र एनमालाके कमीने प्रवेश करते सन्द जिस कामनय शरीरको लाया था, वह रामनालाको सोधक्यी आउनि

जल कर खाक हो गया । यह वहाँसे पीछा छीटा और बहुत ही धीरे धीरे पैर उठा कर जाने छमा ! यह देख कर रत्नमालाका की और गर्व कुछ शान्त हो गया । उसे कमरे ने बाहर होते देव कर रानमाळा घोळी-" सुभद्द, जरा खडे रहो, बाहर न जाओ । ^{प्र} समझती हूँ कि तुम अब पहले के सुभद्र नहीं रहे। इसी कारण में नुमसे कुछ अधिक बान करना चाइनी हूँ । अब मुझे तुम्हारे मा^ब बात-चीन करनेमें कोई भय नहीं है। मरा विश्वास है कि पहें जो पापी सुभद्र आया था, बहु अब मर चुका है और उसके बदहें

उद्यक्ती अस्ता होता र श





: 0:

गुभद्र कहाँ गया

इस्तुष्प-आतिको प्रापः एक हो प्रकासको मृत्युका अनुभव होता है।
अर्थात् भनुष्य अब अपने संगे-सम्योधियों और विपुष्य
पन-दौक्तको छोड़ कर इस संसारसे चत्र यस्ता है तर कहा जाता
है कि उसकी मृत्यु हो गई। स्पूत्र देह और स्पूत्र सम्पिको छोड़
कर अजाने-अपरिवित देशमें-परलोक्तने वाना स्पूत्र मृत्यु है। मृतुष्य
आतिका इस स्पूत्र मृत्युक्त अनुभव देहा कह देनेवाद्य होता है वैसा
और कीई नहीं होता। परन्तु इस स्पूत्र मृत्युक्ते पहले वो सिक्हों
मूर्य-भाव-मृत्युक्तों का अनुभव यह मृत्युक्त एक हो शरीएने करता है
उसकी खबर रखनेवाठे छातों, बहिक करोड़ोंने भी निक्ते कहिन हैं।
इनने वो पहाँ पह प्रस्तावना को है। यह इसकिए कि सुभदकी
भाव-मृत्यु आज हो जुकी है।

बो मुमद पाय-शहनाओं को हरपने रख कर राजनाजा के पास गया पा उस सुमद कर हरण आज कोई मिन हो प्रकारको पुण्य-मायना प्राप्तिक कियागों में उन्हार हा है। यह ले और सबके सुमद में जमीन असान के उन्हार किया है। यह सुमद कान मोह-रूप गर्मिक कर है। इस सुमद की किया है किया है। इस सुमद की किया है। इस सुमद की कर्य है किया है। इस सुमद की असाम की क्षा है। इस सुमद की असाम की क्षा है। इस सुमद की असाम की कर है। इस सुमद की असाम की किया है। इस सुमद की असाम की किया है। इस सुमद की असाम की किया है। इस सुमद की असाम की की किया है। इस सुमद की कर सुमद की किया है। इस सुमद की की किया है। इस सुमद की किया है। इस सुमद की किया की किया है। इस सुमद की किया की किया की किया है। इस सुमद की किया की किया की किया किया की किया क

मणिभद्र

पहले सुभरको माब-मृत्यु हो जानेसे बाज उसका सुभर नाम कार्य हो पया है। सुभरते रास्तेमें चलते चलते विचार किया-'' हस बानको के कह सकता है कि मनुष्यक आगा-हितके दरायों कित कार्यों मिलने पर निध्य खुलने होंगे! मेरे लिए तो राजनावादा क्रोपे। एक महान् आशीर्योदस्य हो गया। अब सुन्न विसास दुआ

संसार केवण मुझ-जेस विवयों के कोड़ोंसे हो भार डूआ नहीं है; किं तत्त्वाचा जैसी कितनां ही देवियों भी बहु-बस माताको गोदमें निक्स करती हैं। सम्मुच हो बाज रत्त्वाचाने "बहुत्वा बमुंबर्सा" कहावत को चारितार्थ कर दिया। अहा। रात्त्वाचार के उस समयके हिंद तेज कोर प्रमावका क्या दिकाना है कि जिसकी एक ही स्टब्स सावर मेरी सारी दुए-वासनार्थ मस्स हो गई। क्या यह अद्यवस्थ

तेज होगा! या हृद्यको जाञ्चल्यमान पविज्ञताका प्रकाश होगा! य बात पहले मैं नहीं जानना या कि एक अबला स्नी मी मुझ जैसे

दुर्दमनीय पुरुषको इस भीति क्षण मात्रमें पराजित कर देगी। पर्रे बब भेने देख पाया कि अवश्वित्रमाका और अभेने पास अध्येका अभे कारमय पात्र श्राणमर मा नहीं टहा सकता। त्यामाकाने आज भें कदार कर दिया, आर इस निए आत्रमे नह मेरी गुरु हो गाँव । उसी बहुन टीक कहा था कि मांगमालानी देना प्रविच नारोका पति हीं जैसा पुरुष्टि नहीं हो सकता। स्थिपनिल्योका अब नक मैने वो वर्ड

दिया उसके छिण अब पश्च-लाप करनेमें कुछ छाम नहीं। अब है यही ५क मात्र उपाय है कि बाकर मणिमाछिनीसे क्षमा माँगी अर्थ



सणिभद्र जान पहता है कि तुम जैसी सती-साप्योको कट पहुँचा कर मैंने वे पाप किया है वह किसी तरह नट नहीं हो सकता। इतने पर मी

में तुमसे एकवार क्षमाकी भीख माँगता हूँ । जिस प्रकार स्तमावारें भेरे सब अपराधोंकी दया कर क्षमा कर दिया उसी प्रकार आध के तम भी क्षमा प्रदान करोगो । में तस्क्षारा अयोग्य पति हूँ और

इस कारण एक अयोग्य व्यक्तिपर क्षमा कर अपने स्वामाविक उदार हृदयका परिचय दो । मेरी यह अन्तिम पार्यना है। इसके सिवा दूसरी प्रार्थना करनेका न मुझे समय है और न उसके टिए में योग्य ही हूँ। अब अब मुझे जान पड़ेगा कि मैं तुम्हारा योग्य स्वामी बन सका हूँ-तुम्बारा योग्य सहधर्मा बन सका है और तुम्होर पास बेटनेका, अधिकारी हो सका हुँ तब एकबार फिर तुम्हारे प्रवित्र दर्शन करूँगा । देवी, इस समय अधिक बात करनेसे मेरा अशान्तमन और अधिक अशान्त होता, इस छिए आजा दो और मुत्रे भूख जाओ। वे दुःदास योग्य स्वामी न या और न अब हूँ । मैं विषय-वास्ताका ण्यः कोडाया। विषयी मनुष्यका स्याहस्याह नहीं कहा जासकताः किन्तु पाद्मिक-दृतिकेचीरर्ताय करेनका एक राक्षमी साधन मात्र है। ने इस समय तुमस क्षमाकी प्रार्थभाक सित्रा और कोई प्रार्थना नहीं कर सक्षण । यज्ञ अला प्रदान करता तो मैं अपना सस्ता पकरूँ l मः मना लानी की आखानी तका अन्तर मही यह देश कर सुभईने



मुँह दिखाना बहुत ही छम्त्रा-जनक जान पढ़ा; परन्तु आखिर नीय मुँद किये बद्द उसके पास गई । उस समय उसकी आँखीमें ऑर्ड छडक आपे थे । बढी कठिनताके साथ काँपती हुई आवाजसे उसें

कुछ बेल्नेका साइस किया । उसे जान पड़ा कि रज़गालाके सा अनुःचित व्यवद्वार कर उसके पति सुभद्रने जो अपराध किया या, व मानी उसीने किया है और इसके छिए उसका हृदय भर आया बोळनेका यल करने पर भी उसके मुँहसे एक शदूतक न निकः सका । यह देख कर रतनगढ़ा एक क्षण-भर के छिए स्तम्थन्त्री है गई । इसके बाद वह मन्द मुसक्यान द्वारा हदयके सन्तोपको प्रकृ करती हुई मिलिमाकिनीके पास जाकर उसका द्वाय पकड काई भी उसे अपनी शय्या पर बैठा कर उसने बॉचडसे उसके बॉस् पोंड डांडे । जब मणिमाडिनीका मन कुछ स्वस्थ हुआ तब कीम्डांगी रतमालाने उससे पूटा-- "क्यों बढिन, किस डिए रोती हो ! क रातको तो तुमने हो मेंगे ग्ला की. और आज तम्बी से रही हो ! यह देख कर मुद्रे बडा देख और आधर्य होता है । बतजाओ, प्रार्ट रोती हुई देख कर फिर मैं कैसे धीरज रख सकती हैं। तुमने ! वचनौ द्वारा मुझ बोरज दिया था, उन्हें तुम भी तो स्मरण करें।।

स्मूम्पद्रके चले जानेसे माणमालिनाको बदा दुःव हुआ । विषयण हृदयसे स्त्रमालाको पास पहुँची । उसे स्त्रमाला

रत्नमाला और मणिमालिनी



निधोनेसे कुछ जाम नहीं है। मैं जो कड़ें उस पर विश्वास करें ्र बे दह निश्चय है कि सुमद्र घर आये दिना न रहेंगे। बद कि पका सक्रप जान चुके हैं, अपने किये कमी पा उन्हें अन धानाप है और इसके किए वे प्रायधिन भी करनेको तैयार हैं, म

पवित्र और ब्रामी बन कर अवस्य तुम्होरे दर्शन करनेको आँको म पर्ण हरप जब पवित्रताके मार्ग पर चलनेकी स्रोग बहुता है हैं।

मणिस्रत रनमालने बहे प्रेमसे उसके ऑस् पीठ कर कहा--" बहिन, अ े.

सका वेग बड़े जोर पर होता है । तुम्होर त्रियके हृदयमें इस मु^{हर}ू ो वेग शुरू हुआ है वह जब तक कुनकार्यन को छेगा तह ^{तह} ह भद्रको न छोड़ेना । इससे जिए घबतनेकी कोई आपरवस्ता नहीं। त विश्वास है कि तुन्होर प्रिय घर पर आरोंगे और तुन्हें दर्शन देश ताब करेंगे। यही नहीं, किन्तु खोचोंके ऑस वॉक्नेके जिए वे सि ।सारी बनेंगे । बहिन, स्पर्वकी धबराइटमें पड कर इदयको संन्त्र रना टी ह नहीं है। देखा बहिन, मुद्रे अब प्रदादा बात-बीत हरते

। सब में कहे देती हूं। बहिन, यदि में चाहता तो इससे पहले ही िमीको माम मह होती; परम्य नम्हें कुछ लास बाने सुनानी घी, 18 त्रिय इस नग्द्र चंड जाना मुद्रे उचित नद्दी जान पदा, और इसी देश में अब तक इस वामें हि सकी हैं। जहां बाल देवर मेरी

व समय नहीं है, इस कारण मुत्र जो कुछ बातें तुबने कहती है

हत्त्वी सन्ता ।

र नमा दा रहस भौति हा न्यानीभी र सीर परिता संपानवाले वचनी



और कोमखतासे बदा—" इसी छिए तो मैं तुमसे बातें करनेकी वह तक जगती रही। मैं सब हाछ तुम्हें सुना देना चाइती हूँ। १९८उ एक सात है। यह यह कि ये सब बातें तुम क्लिसेस, यहाँ तक कि मुमदसे भी न कदनेकी प्रतिक्षा करों तो मैं अनना सिक्सिछा को चाछ के 1 ग यह तक तर रानाखान मणियाजिनाकी और देखा 1 उससे मणियाजिनी बहुत वार्षिन्दा हुई। उसके दोनों गाछ छाउ से

उठे । यह द्वाप जोड कर गद्गद् केटसे कुछ कहना चाहती कि मधारा बीचदीमें बेल उठी—"अध्या, अध्या, में समझ गर्द । अब सुर्वे बेल्पेके लिए कर उठानेकी कोई आवश्यकता नदी है ! उन

मणिमद

हुली और अनाकोंकी सेवा-सुध्या करूँ। जिल्लानीन सूत्रे बहुन कुछ हुमद्राया एक्ट्रामिन उमार कुछ जानान दिया। में अपने की निवारीम सम्बादी। मेगायह हा जिलानाम बहुन बुग लगा, पष्टा हममें मुद्रे क्या १ जाक कि ज्या में अपने के प्रायानीका औं के बेट्टेंग्यह क्विया करमा यह न कमके लिए आरिमें अन्त स्थेत हैं







कर दिया है। यह छे उठ में मुँद गर जो महा विचाहकी छ या फैलो सहें यी बढ़ अब नट हो गई है। और उस भी जगह उस में सालनिक आयन बोधनोंने एक बहुत हो मोहक सुध मात्र विक रहा है उस में हरवाम अब यह कहना अनुचित न होगा कि बहु असी अपने ससारों और असने गत-बोबन भी विज्ञाको मरेगा हो मूर्ग गया है। कारण अब उस भी सब हुमीवनाये सालन हो गई है। स्व

प्रभुक्ते हारा विश्वज्यायो मेत्रो और वैसाय-मबन्धा सुधा-महूस उपहें श्वन कर ससारका स्वच्या और जीवनक कर्त्वच्या-मुक्चप्रक निवारी ही निस्त्यर मग्न रहता है। यथि। अभी वह मनिन्यद सामके नि

सुभद्रने क्या किया ? उसके इदयमें पैठ कर उसकी गहगईकी तह तक खिल्थ प्रकाश दिन्

भागवाली नहीं दुमा है तो भी असारण समार बधु वीरामुझ स्थ तैरों के प्रति निर्देश स्थानशा और उनकी तेनीमधी चारिन मूर्गर्थ अपनी ऑस्कों के सार्थन आदर्श रच कर घोर धोर असना माम्त और विभागतील चन गया है कि उसे उपचारमें मुनि कहमें दूब कर है जिन न होगा। वह रम समय जित्तवकों किसी एक होटेलें कैट ही ने प्रारंग परना है। चीरामुके पास जाकर उसने बहै कर दिखांक दिल प्रारंग की, परन्तु मुने जब नक उसे दीया के के आज प्रदान नहीं की। मिनान दीधांक हिल जुन देवारी कर स्था है—सर्वत्यन-जनवाको उसके योग्य बना दाई है। वर्गना कास्त्ये

हा पढ़ दह विनास भूनि अ पन निर्मेश्वस खप्याम हर रहा है। प्रे न र भगरान र सावज दशन हरना है, और भगरानह हैंकि कि नार र अ द तह हुन हर आपना हनावें करना है, स्पे









दोनों भाई

पूडा—" वड़े भैपा, यह बात तो अब तक मुझते किसीने भी नहीं कहीं कि मेरे कारण तुम सबको बड़ी भारी विडम्बना मोगनी पड़ी है और मेरे हो कारण पिताओं इतनी बुरी दुर्दशामें फैंसे हैं। सचमुच भैपा, में बहुत ही बे-समझ हूँ; पर तुमने मुझ इस दुःखपूर्ण घटनाके समाचार क्यों नहीं दिये !

अच्छा बड़े भैया, बतदाजो, ऐसा मैंने क्या अपराध किया है ! बतदाओ, मुझ जैसे कुपुबके किस दोपके कारण पिताजीको ऐसा संकट उठाना पड़ा ! बतदाओ, मेरे ऐसे किस दुस्कर्मके कारण पिताजो इतने कुश तथा शोकाकुछ हुए ! जान पड़ता है इन सब बार्तोको सुनमेके दिए ही मैं अब तक जी रहा है ।"

सुमद्रने कहा "यह क्या मणिमद्र क्या तुन इस वातको बिरुकुछ खर नहीं है कि अपने घर पर कोई एक महीनेसे जो सेकड़ों बासम निद्वान् और धनी-मानी सज्जन रोज जा-आ कर प्राईवेट सलाइ-समति और योजना किया काते ये वह सब क्या त् यह नहीं जानता कि यहाँ दिनशत कितनी बात-चींते और कितनी करणनार्य हुआ करती थीं ! और न तुने इस बातके जाननेका कभी कूत्इछ ही हुआ कि ये सब पिडत लोग किस लिए आते हैं, क्यों पीछ जाते हैं और क्या बात करने हैं ! मणिमद्र, तेरी यह अज्ञानना देख कर सचमुच मुझे बहा अवंभा हो रहा है । इस बातको मी तुने सबर न हुई कि घरने क्या हो रहा है । अ धर्म है । इस बातको मी तुने सबर न हुई कि घरने क्या हो रहा है । अ धर्म है । इस बातको हो सात हो रहा है । अ धर्म हम बातको हो न स्वानको भी खराह न हुन कि स्वान हो रहा है । सुन स्वान हो सात हो रहा हो रहा स्वान व के सात हो रहा । "

सुमदकी बाने सून कर नारामणका सरत सुँद विकाद-रार्ग और

म

गंभीर बन गया । मुभदने मिन्निक्को ओर देखा तो उसे इस हम भी मिनिमदको स्वच्छ ऑलोने निक्तपटता दिखाई दी। मिनि स्वक्को बातोंका क्या उत्तर देता है, इसके टिए यह अध्यन्त छड़ा मी उत्तर ।

बचना चलाका क्या चला दता है, इसके विष् यह जन्म कर्म हो उठा। मिणमदने पहलेको हो माति मुमदको ओर चिकत टिटिंचे देव कर कहा—" नहीं, बड़े भैया, मैं प्रतिहा पूर्वक कहता हूँ कि उट समय इन बालोको ओर मेरा बिहकुट हो प्यान न या। भैया, क्र

बता नहीं जानते हैं कि जिन दिनते सेनदायों माँ हम जमानी छोड़ कर सर्ग रिकार गई हैं उस दिनसे एक दिन भी मैंने कर मार्ग पत नदी दिया है। जिस करोनें उस पर्यक्त साठ प्रतिभी मीने सेन पूर्ण सजल नवनींसे मेरी और देखते देखते वर्षावर साठ परिश्व स्थान उसी दिनसे उसी करोने देश ने होंगे में ने कर अनने दिन मैं उसी दिनसे उसी करोने देश ने होंगे में ने कर अनने दिन मैं

किया बरता था। न जाने एक दिन क्यों एकाएक मेरी क्या केय समय बाद पूम कांनकी हुई। में किसीसे कुछ न कह मुन कर अने पासे निकता। दरवाने बादा निकल्से सनत मेंने अरने पासे वर्ष केर पर कुछ महान विहानों और गुहरवीकी बड़ी धरावाई में बान-बीत करते हुए देखा था। शिवाकी भी जनके बीचने गांव पर

रबंबे हुए कुछ नहरा निचार कर रहे थे। उनकी ऑबोर्स में चया इटके बिबड राष्ट्र दिसाई टेरडे थे। उनके निकासूणों मुँड के के रारे भर मनने आता की दिनातीश गुरू कर निवय कर कि कर्या कर कर वह बें और ये सब छोग किस कारणा बरुई हुए हैं। राष्ट्र कर कर वह बें और ये सब छोग किस कारणा बरुई हुए हैं।



मणिभव एगा।" इसके बाद धनंत्रय मी खुर हो रहे। धनदचकी यह स^{म्ब}

मुझे बहुन अच्छी जान पद्में; परनु साप हो इस बात के छिए हैं बड़ी उपलब्ध कर मह कि प्रमंजय सेठ मेरे साहस्थ्यों क्या बात की वाहसे थे। मेरी हम्बाइ है कि में उनसे सह बातें पूर्ण परन्त हैं परन्त की स्वाह । में यह सोच कर जे सह गया, कि प्रमुक्त उपरेश समाप्त हुए बाद जे जुठ पुष्टमां यह पूर्णमा। परनु उस दिन नपुक्ता उपरेश हसना प्रभावमां मधुर और तत्वपूर्ण हुआ कि उसे हुन कर में बाद जलवृत्ति मुधि मुख गया। आपनो साम करों का क्या किस सद होता है, प्राणियोंको संसापनि किस सद कराँका क्या किस सह हिस से प्राणियोंको संसापनि किस सद कराँका हुआ हम कर किस सह कि से तो हैं। प्रभावमां का मार्गोंका प्रमुने हतना अच्छा सुक्षा स्वस्त कर कहा कि से तो हैं। प्रभावमां स्वस्त मार्गोंका प्रमुने हतना अच्छा सुक्षा स्वस्त के और सुक्ष कर्यों का प्रमुने हतना अच्छा सुक्षा स्वस्त के और सुक्ष कर्यों जाता

भेग हुई तब मुझे जान पड़ा कि जेनवनके इतने बड़े सभा-गण्डा केवड़ में ही अकेबा बैठा हुआ हूं। बीरामु उपदेश समाप्त कर अं शिष्पोंके माप बहाँसे सब बीर कहाँ बेठ गठे इस बातका मुझे हुँ प्यान नती रहा। प्रमुक्त उपदेश समयकी वह गर्भार-मधुर कोन्छ र्य नब भी मेरे कानीमें गून रही थी। जब में अन्डी तरह सचेन हों जब पुत्र एक बार अपने बारों कार्यकी याद आई। उस समय जान किस लिए विमा हो कारण मेरा हुद्द कीप उठा। मेरी और्ब

इन बातोंका मुझे कुछ भी भान न रहा । जब मेरी विचार-समा

माण्न एक ेमा अस्पष्ट इध्य दिश्वाई दियाकि अपने प्र^र कुनुष्य रहकोड बडो मार्सवियनि आकर गिरीद्वी कई बार ^{हर}



न रहते हुए भी बासणों के दशव और भयके कारण उन पर क हुई विपत्ति—इस्पादि सब बातें कह रहा था तब उसकी आवासे

मणिभङ

यह भी स्वष्ट जान पड़ना या कि वह स्वयं भी उन बातोंसे डिझ

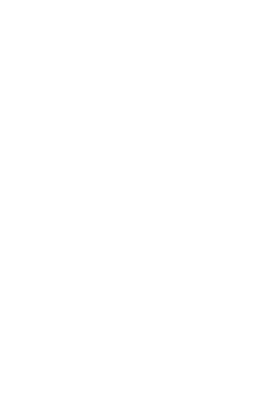
हो रहा है। इसके बाद उसने, गत रातके सनमाजाके प्रति किये में अपने तुराचारका सब दाल भी विना किसी कपट भावके मणिमहरू सुना दिया। अन्तर्भे उसने इदयके साय जो आत्म प्रतिहा की पं वह भी मणिमद्र पर प्रकट करदी । उसने कडा- " भैया, भैने बर्ने भयंकर पापका प्रायश्चित करनेके छिए हिवर किया है कि वरिप्रमुखे हारण जाकर काम-कोधादिकी भीषण अवालाओं से धवक गई इस संसार वनसे निकल भागनेके लिए, धर्म और संघकी सेवार्य में अपने प्राणीने आहुति देकर आत्माको पवित्र करूं। "यह कहते हुए सुमद्रक गटा रुँध गया । आँखोंसे दर दर आँसुओंको छडी छग गई। मगिम्द भी अपने बड़े माईकी यह दशा देख अधिक देर शान्त न रह सक उसकी बाँखोंमें भी बाँस भर बाय । जिस समय ये दानों भाई है प्रकार अधुनलसे इदयनी मलिनताको धो रहे ये उस समय वहाँ ऐसी कोई अन्य स्पक्ति मौजूद न यी जो उन्हें धीरज बँधाती । उस समयकी प्रचंड अधिवर्गाको देख कर यह जान पहला या कि प्रकृति इन दोनों बन्धुओं के रोनेमें खुश है। पक्षी-गण भी इस भयसे बड़े-शान्तहें बैठे हुए ये कि कहाँ उनके चह-चहानेसे उस मधुर रोनेमें कोई विध न आ जाय। आस-पास कि.सकि भी आने जानेकी आवाज सुन्हि न पडती वी । ग्रीय्म समयके दो-पहरके सूर्यकी प्रचड गामीके मारे मनुष्य-पञ-पक्षी आदि कोई भी बाहर निकलनेकी हिम्बरी



: ११ :

नि रो घ उद्गापन बुटे समन्तमदका सुखमय संसार धृडमें मिन गया है। नि

समन्तभद्रका घर सदा आनन्दित और स्वामाविक गौरवसे उन दिखाई पहता था, उसी घर पर आज विपाद और विपत्तिके धनमे बादछ मेंड्रा रहे हैं। जिस समन्तमदने यञ्च-रक्षण, बछिदान में बाह्मणोंकी स्वार्थ-स्काके डिए आज पर्यंत शक्तिसे बाहर यन कि था उसी पर शहरके बड़े बड़े विद्वान और धनी-माना बासण आ कोधका पढ़ाड़ ढाइ रहे हैं। इन छोगोंका इस बातको सुन कर मे रोम काँप उठा है कि समन्तमदके दा छड़कोंने जेतवनमें जाकर बंध प्रमुकी शरण ली है और इसके सिया वैदिक धर्मके देपी कीशामी नियासी आयक बद्धभूतिकी खड़की रत्नमाळा उन्हींके बरमें बाक्त ठहरी है; और वहाँ उसका बहुत आदरसरकार किया जाता है। आखिर उन छोगोंने यह निश्चय किया कि यदि समन्त मद्र समाके बीचमें इस बातको स्वीकार करें कि वे अपने पुत्रोंके इस काम पर खेद प्रकाशित कर उन्हें त्याग दें और स्तमालको घरसे निकाल हैं। तो इम छोग उनके साथ सामाजिक तथा धार्मिक सम्बन्ध (वर्षे) नहीं तो धनदत्तकी भाति उन्हें भी स्वधर्म-अष्ट समझ कर सारे शहर में ऐसी डोंडी पिटवा देनी चाहिए कि उनके साथ कोई किसी प्रकारक



मणिसद कडकी समामें समन्तमद बरने बयोग्य पुत्रोक्त स्टाके छिए पीन करम, और उन्हें अरने रिताकी सम्पत्तिमें से एक कौड़ी भी निकें

इतना ही नहीं, किन्तु उस समय समन्तमद और उसके कुटुम

छोग इस बातकी प्रतिज्ञा करेंगे कि वे समद और मणिभदके स कोई प्रकारका सम्बन्ध तक न रबखेंगे। सारे शहरों यह प्रकट व दिया गया कि इस समाके समापविका आसन राजकुमार जेतारी प्रद्रण करेंगे । साथ ही उन छोगोने यह रिवर किया कि इस सम जो महाबीर स्वामीक यहाँ ठहरनेसे झावस्तीके छोग दिनों दिन नेदिर धर्मका त्याग करते जाते हैं और अन्याय तथा अवैदिक आवः बढ़ते जा रहे हैं इन बार्तों के रोक्लेक छिए महबोर और उनरे शिष्य जबादस्ती आनस्तीके बाहर कर दिये जाये । समन्तमद्रके यहाँ जो जो बातें निश्चित हुई उनका हाण धनदर सुभद्र और मणिभद्रेक पास भी पहुँच गया । श्राह्मणीका यह विरोध देख कर वे छोग बहुत हरे । दोनों भाइयोंको इस बातकी बड़ी विन्ता हुई कि पिताजीको इन बातोंसे कैसे बचाया जाय और इसके छिए ने नडी देर तक विचार भी करते रहे । सारी सव उनकी हरी बातके विचारमें बीत गई कि कडके दिन क्या करना चाहिए और यह विरोध कैसे शास्त होगा । प्रयस्त करने पर भी उन्हें शास्ति हो जानेकाकोई मार्गन मुझपदा। सबेरा होते ही धनद स, मुमत्र और मणिभदके साथ बीरप्रमुके दर्शन कानेकी जेतवनमें गये। दर्शन का खुकसेके बाद अन्होंने वे सब बातें भगवानसे कह सुनाई जो प्रमुके विरुद्ध सभा लुडाने और



ही शोभा हो गई। उस समय प्रशेखों और उतकी और राटि देने यह जान पहता या कि उन स्वर्गीय छन्दित्योंके रत्नालंबारको उग्ध कान्तिसे प्रकाशित सुँद पुष्प-पराम युक्त कमलोकी सुरदस्ताको विज कर रहे हैं। ठीक समय पर आवस्तीके सम्बद्धमार जेतासिह अपने कुछ प्रधान सम कर्मचारियों और शहरके प्रतिष्ठित पुरुषोके साथ समा-मण्डपने अप समन्तमहने अपने बड़े पुत्र सनमदका झाव पकड़ हुए उदेश-र हृदयसे उनका स्वागन किया। इस समय समन्तमदके मुँद प विपादको रेखा स्वष्ट दिवाई पहली थी। उसे उग्होंने कृतिन हैंसी डिपा देन। चाइप; परन्तु यद न डिप सकी । उस इँसीनें भी उन्हें

हृदयक्ती वह विपादपूर्ण कालिमा प्रकट हो रही थी। सञ्जूनाक संस्कार करते समय उनका हृदय बढ़े जोरस भड़क रहा या। अर्गे प्यारे पुत्रोंको सदाके डिए पश्चिमान करनेके कारण उनका हृदय ट्रा जारहा था। उन्हें इस बातका स्थाने भी खयाल न था कि इस कूरी अवस्थामे धर्मके लिए इतना असदा कष्ट सहन करना पडेगा। अपना पूर्व प्रमाय और अधिकार सत्ताका रमरण कर उनकी ऑसोमें ऑस भर आये । लोगोने उन आँसुओं हो आनन्दाश्च समझ समन्तभद्दश आदर किया। यह देख समन्तभदने नी आँस् पौछ कर कृत्रिस इसीसे-उन लोगोंको खुश किया।

राजकुमार और भीरे सिंहद्वार छाँव कर अपने कर्मचारियोंके सार _इसमामें आये। मिहासनकी दक्षिण बाजकी विदन्भण्डलीके सिवास^ब है। छोगोंने खंडे दोकर राजकुमारका स्वागत किया। कुमारने भी बड़ी-



मणिमद विभा आ-उपस्थित हुना । सब छोग प्रस्परमें पूउने छगे कि यह सब क्या गड़कड दे-यह क्या हो रहा है ! इसके लिए बाहरकी और उन्होंने दूर तक नजर दौड़ा कर चरी और देखा; पन्तु उन्हें युंड़ भी पतान लगा। धेरे धेरे सबको जान पडा कि वह कोडा^{हड}

पास-पास आ रहा है। उसके शह भी अब उन्हें कुछ बुछ स्पष्ट सुनाई पड़ने लगे। इतनेमें एक साथ हजारों भक्ति भरे कठोंसे निकली ईं नय-नदावीर स्थानीकी जय !-जय, जैनशासनकी जय !-की विगर् ष्यति उटी और समाके छोगौंको जान पड़ा कि वह aस विशा^छ

जन-सामरको दवा देना चादनी है। इस चतको कोई नहीं समई

संका कि यह स्था जुला और लगा प्रभी कीन आगया र समाका

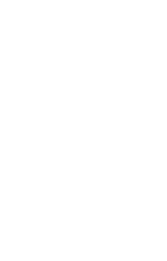
काम आगे चळाने के दिए उन छोगोंका सब यत्न निभक्त गया।

अन्तर्ने अब कुछ बरान चटा तब उद्गा, विश्मय और क्रोपेसे कॉ^{युने}

इर प्रेबारोन एक बन्दी साँग थी और 'हा देव !' कह कर विवध

वड अपने आसन पर वैठ गया।







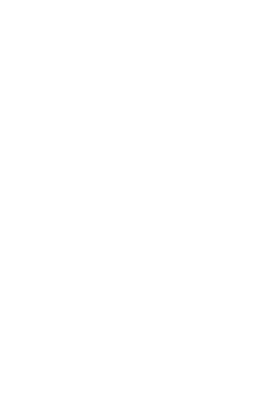




रत्नमाला कहाँ गई यसुम्ति स्लमाना पर क्षितना प्यार करते थे 1 इस कारण अर्थे (र

स्वामाविक ही है। सनमावाकी नानीको भी इस ममाचारसे बड़ी 🕬 दशा हो गई। जबसे उसने यह समाचार सन पाया है तमने उसके ऑक्कि ऑसू अस्तक यमे नहीं हैं। चारी और इसी जिपवकी की होते खर्गा कि र त्रमाख कहाँ थी, उसे किसने, कब, वहाँ देखा छ और यह कही चटी गर्श प्रत्यु किसीकी उसका सन्ते।प-जन्द समाचार ज्ञान नहीं हुआ। यहाँ पर जो सनमाव्य अपने बहुम्हर वला-भूपणी और पुस्तकोंको छोड़ गई है उन्हें देख कर वसुमानिका दृ.ख और भी अधिक बढ़ जाता है। जिस समय त्राझण-समातको यह विशाह समा समाप्त हुई जैरी बाहरसे आई हुई महिलायें समन्तमहारे घरसे अपने अपने घर जाने लगी उस समय उनकी घोडा गाड़ो आदिके कारण चारा और बड़ा कोछाइछ सच गया या। किसीको गाडोका पता नहीं या। किसीके सईस लोग कही चल गये थे। किमी ही गाड़ी के बैलों या बोड़ी हा पता नहीं था। किसीके नैक्कर-चाकरीको बार बार प्रकारने पर मी बुद्ध जबाब न निल्ता था। अनुसंधानसे सबने यही निश्चय किया हि राजमाटा अपने थिए इस गड़बड़के मौकेको अच्छा समझ कर ह⁸ समय चलदो है। उस समय समन्तमद्रके नीका-चाका और शर्क छोग समामें आये हुए जन-समाजके खाना करने तथा उनसी

बूढ़ी दशामें अचानक ऐसे भवंडर आधातमे अधिक कटका होत



रस्तमाला कहाँ गई

साय वह पत्र उन्हें पड़नेको दिया। पत्रको पङ्ग कर बनुमूरीकी अन् भी आनन्दाश्रु भर आये। पत्रमें टिखा द्वआ या कि— "विय बन्धः

अपने विष कित्र वसुमृतिको बन्या स्तवाद्य कल आये गर्ग बनागम सुवर्गपुषको धुनियोक्ते साम करे यहाँ आ गर्ह है। यह मार्ग बिना कुछ पूछनाछ क्यों आहे, इसके जिए सेने उत्तरे बहुत से साछ की, सर्व बन्योय-जनक तथा कुछ नहीं मिछा। जान प्रस्ति

तारे के, परते क्यार-जमत उत्तर तुक नहीं जिला जान पुत्र सं विषयमें पुत्र के कुठ बहान नहीं जाइनी। उसकी एका है कि कर ने उसके दिता को शास्त्रीहन कीट अभीग नव तक बढ़ मेरे ही घर रहेंगे बमुन्तिकी या आपकी पुत्रोकों में अपनी दी पुत्रो सहस्रता है, हम्स् उसके दिए किसी प्रकारकों चिन्ना न के जिलागा। तक दिन जैसरे भगवानके ही पास था, इस ब्राल आपको जन्दोंने में सामायर नहें या

आशा है इसके लिए आप मुझ खना करेंगे। रननाला चाहती है कि उसे नानीको भी आप पढ़ी भिजवा दें ना बहुन अभग्र हो। इति रे निरोप यह है कि इसी पत्रक साथ एक प्रस्वपम् रनमालने विं

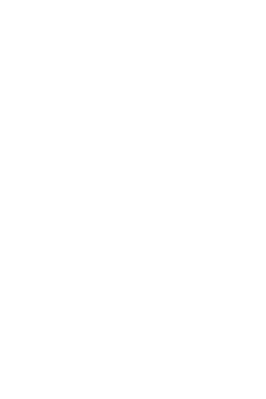
विशय यह दीके इसी पत्रक साथ एक त्य स्वयम् सन्धानि विश कर भेजा है, उसे सेमाल कर मीम स्ववन्ति श्रीविशमादिनीके परि पहुँचा प्रीतिशमा ।

आपका मेवक—

धनदत्तः"

ं स्त्री । उर स्वर्धनिमें मानों नह चनमान्सी आ ग्रहें। उनसे बेटबिल नुद रम्प्यनस्ते स्वर्धनिमें दक्षशित हो उठा वे स्विर क्षमभर्क भी ज्याब न वर चनी समय अपनी शिव पुत्रीसे मिननेको वेचे ग्रम् । इस समाजारम् महित्रस्त्रे । वस्तान्स्त्रिज गर्भीस् मुँद पर भी स्वर्ण

म्पकं लिए 3 द्वास पूर्ण स्निग्ध हैंसीका चादनी खिल उठी !

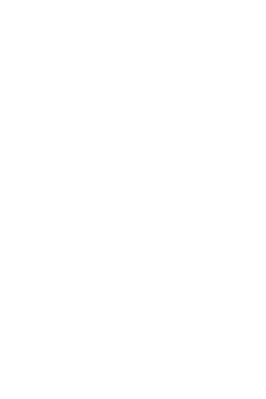


- मुझे माराबीन आजन्य दुःस्त्रिनी समझ कर-सदा चिन्तित तीर देवी रखा करते हैं। बहुत करके तुर्खे भी यह बात माद्रम हो होगी। १६६६ सिवा में इतनी क्रमांगित हैं कि बहाँ जाती हैं वहाँ वहाँ सिवि

में रे भी उं बी भीज दीड़ती रहती है। तुम स्वयं इस बोलकी सीच सर्म बैं कि स्वमंग ने नुर्दार पर आई हूँ तबसे तुर्दारे सुख्यत्व संसार पर किली किल्मी स्विभियों आहर गिरी हैं। मेरे स्वाला नुर्दार कुटुम्बों आंबी रिपार्टियों महनी रही हैं। इसे बाद करके मेस हदय कीय उठला है। कुट हरूपानित्यु सीवम्बेन स्वयं प्रधार कर तुर्दारे परकी प्रस्तित्व किया था। मुद्रेन यह देख कर बहुत आनश्च हुआ कि उनके परि

सांपाधन्त्र बाद पिताओंने भी भेरे लिए कड उठानेंमें कोई बात उठा न सर्व पत्नु दूख दे कि जन्मसे आज तक मेरे द्वारा कोई ऐसा क नदी द्वारा जिससे पिनाओं एक स्वयान्यक्ते लिय भी मुची होरे। बाईन, रिनाओं के स्नेडको तो में बाद ही बचा कहुँ, वे भेरे हो सि

खणां के भू देन तुष्कारा पर पश्चित हो गया और उसकी सह किर वियों दिशन हो गई। इस समय संभव है, तुष्कारे मनमें यह वर्ष कर्य कि तब यही दनना जानन्द था नह दिस्स पेने समय क्यों तुष्कार वर्षों अपन आई। क्यों में उस कर्य विसी करों। वन गई र बहिन, यही बात सम्माने हैं दिस्स नेने वर कि हैं होता है। उत्तन् बहिन, बाव बीचने बनने यह भी मतना है। का है करन भाव का हा भावामा करना हो। अपने हैं। इस हमें



मणिभद्र

मणिभद्रके साथ ब्याइ कर देनेके लिए कइ चुकी हूँ तब इस तथ इधर-उबर मागते फिरते रहनेका क्या कारण है। इसके उत्तर्में से इतना ही मात्र निवेदन है कि आखिर मैं की हैं और इस बातको अर्फ तरह जानती हूँ कि मेरा हृदय कितना दुवंछ है और कहाँ तक उन्हें दुर्भे उदोने की सीमा है। मैने उस दिन यह कहा या सही कि मै मणिभद्रके साथ ब्याह कर दूँगी; परन्तु साथ ही यह मी कहा वाहि इससे भिताजीका मन प्रसन हो, तो मुक्ते छुछ इन्कार नहीं है। और न तम ही इस बातको भूली होगी। परन्त जब मैंने इस विषय पर अग गहरा विचार किया तब मुद्रे जान पड़ा कि स्थाइ करना अध्यानहीं है। यही कारण है कि मैं अपने सफल्पको छोड कर यापिस पहते सकरा पर आ गई हूँ। यह सकरा यही है कि इस जीवनमें में करी व्याह न करूँगी। मैंने अपने जीवनका यह उदेश्य हियर किया है कि विन-दक्षित लेकर में धर्मका अनुसीयन और परहित-सेवा-वतका सर्वे ६६पसे पाजन कर जीवन बिनाऊँगी। मैं जानती हूँ कि पिताओं भेगे इन प्रतिश्राको सुन कर बहुत दुखा होते; परन्तु इसके छिए में बले जीवन के उस उद्देश्यको पाँव तले सेंद्रना नहीं चाइनी। इस बानस निवार करके में काँच उठनी हूँ कि मेरे इस निध्यक्त रितानीश अधिन अन्यन्त कष्ट-मय बन जायगा, परन्तु छाचार हूँ ! जान पडता है नाग्यने क्रज नीर श बदा है। बहिन, मेरा श्रमन्मर भी ऐसा समय नहीं बीतता जो हदयमें दिवाओं ं दुन्वका विचार कर न देना हो। में यह जाननी हूँ कि दिलागी का मुझ पर अध्यन्त है। रनेह है बीर मेरे इस निष्टुर स्वाहार्क







कमी नहीं चुका सकत्रि। इस कारण तुम जैसी पवित्र हदयकी गाँउ से ही जो मैं अपने हृदयकी सब बातें खोल करन कई तो बि कहूँगी ही किससे ! और फिर ऐमा करनेसे मेग जीवन मेरे डिए ही कितना दु:खरून हो जायगा, इसकी तो मैं करनना ही नहीं कर सकती

मणिभन्न

मेरा विश्वास है कि अपनी सची मैत्रिगीसे कोई बातका जिपान महान् पाप है। बहिन, मुत्ने जो खास बात कहना भी उन्हें में निरेदन का चुसे हुँ। अब एक बात और बार्फी है; और यह यह कि मैं बड़ी प्रसन्

तासे पहुँच गई हूँ और लाव आनन्दमें हूँ। श्रीयुत सेठ सुवर्णगुत-की बन्या नर्मदाके साथ मेरा पद्देखेका ही परिचय था, इस कारन

कड़ दिन तुम्हारे घर पर अनावास ही हम दोनों हा निजान हो गर्मा उससे हमें बहुत अनन्द हुआ। मैं नर्मदाके साथ ही पाछक्षीनै बैठ

कर यहाँ चला आई हूँ। नर्भदा बहुन बुद्धिमनी क्षे है। वह मुझे बहुन

प्यार करती है। हदयसे चाहती हूँ कि शासनाथीश उसका,तुम्हाग और जीव-मात्रका कल्याण करें ।

तुम्हारे स्नेहकी भिखारिकी-

दः विनी रत्नमाला "



समिश्चर इतनी चिक्रिन हो गई; नी इस पर यह कहना है कि जिन्हें इस ए खुरी सपद्मनेकी आयन उत्युक्तन हो, उन्हें मणिमाटिनोक जैसी और सहदयना प्राप्त करनी चाहिए। कारण हृदयको मापको इर

स्पर्ध वर सकता है – द्व हा समझ सकता है। गनम टावा भावन

को समझनेके लिए केवल बुद्धिस ही काम नहीं थल मकता। उसके स्नेह और सहदयतासे पिचलनेवाले अन्तः करणकी भी आवश्यकता है इस प्रकार विचार और चिन्तामें माणिमार्टिनीका बहुत समय गया । अन्तमें जब वह विचार-निदासे जागी तब उसके शोक-र्य मुख पर, घोर अँवेरी रातमें चमको हुई बिजल की माँति उपमातनी इसीका प्रकाश दिलाई दिया। उसके सेडमे अनायास ही निव गया कि स्लमान्त्र, कोई चिन्ताकी बात नहीं है। जब कि तु अर आप दी पकड़ा चुकी देतव में भी तुझे किसा तरह नहीं है सकती। यह नहीं जान पहता कि इस प्रकार बोल उटनेंने मार्न माछिनीकी क्या मनश्रामना है-वह क्या कहना चाहती है। अस्त, बोडी देर बाद उसे कुछ और बात याद आ गई । उस उम पत्रको उटा कर अपन आँचलसे बाँघ टिया। इसके बाद उस एक उर्वी भीम छेकर मन-ई-मन कडा-प्राणनाय, क्या कर्ल, हैं इस समय मेरे पास नहीं हो। यदि तुम्हारा थाहा भी सुन्ने बड हो^{ता} आधार हाता, ता मैं हुउ अरके बत्जाती. परन्तु अब उस कड़ी रुछ जाम नहीं है । अ हा, का भा कार्ड चिन्ताका बात नहीं है। रे केन जय करत मान्य का कमान उद्देश देशी। इतना करी कड़ न पर उन राट्डासर अथा। आल्बोसे ऑस्ट्बड निकड़ें। ्र अदन संबंद क्या सर्वेदय इसके बाद बद्व पतिनामि . Profession of



पास गये। उस समय भगवान अपने पवित्र-सांति कियों के प्रव विशान दूष ये। नदी पर मणिनद्र मी एक मुनिके पास बैठा दूर्व इरवर्षे मुम्के पत्रित्र जीवनको स्तृति कर रहा या। आतत हैंने धनिक अमें क्यांति नमस्कार का अन्ते योग्य स्थान पर वैठ को धनिक अमें के शिर बाद मस् कही अग्यन जाने के किए तैयार हुए। ध देख कर भनदस्त्री प्रमुंसे कुछ प्रार्थेना करना चाहा। प्रमु अन्ते स्निम्य-उज्जव-मुधानसम् दृष्टिसे अपने एक शिष्यको और निहार मं यहाँस च्ये गये। प्रमुक्ते इस दाव्यो क्या गर्भार कार्य सा उसे धनहर्र उसी समय समझ गये। आ यह कहने की आक्ष्यकान नहीं है कि मनवानने बांगवरी

माणभद्र

पर बालाया। मगपानने इतने दिनोंके-आवरण-स्वमाव-विचार आहि



सांकान्द्र पास गये। उस समय भगवान अपने पवित्र-चारित हिम्पीहे हन विगाने कुए वे गडी पर मणिवद भी एक मुनिके पास नैया हैं इरवर्षे प्रभूके पवित्र जीवनको स्तुति कर स्वा या। आगत हों स्वित्र चुलीने नगरकार कर अने वेगय स्थान पर वेठ गरे। इसोर पोडी दर बाद प्रभु कही अपना जानेके खिए तेवार हुए। ध्य

वडाँसे चन्ड गये । प्रमुक्ती इस दाएंमें क्या गंमीर अर्थ था उसे धरद्व उसी समय समझ गय । अर यह करनेकी आवस्यकता नहीं है कि भगवानने मणिस्ट्र आत्म-चिकिता करनेका भार इस अर्थ-पूर्ण दृष्टि द्वारा अपने एक विध पर ढाला था। भगवानने इतने दिनोंके-आ वरण-स्वभाव-विचार वादि द्वारा मणिभद्रको अच्छीतरह कसीटी पर कस क्रियाचा। अ^{स्से} इन छोगोंके सापन पशिभदको बुला कर उन मुनिने अध्यक्त की^{का} बीर मनुष्याने कहा - 'यम मणिभद्र, जबने तुम यहाँ आवे हैं तमीसे में तुम्होर आत्माकी चिकित्सा करता चडा आ रहा है। हैं अब इसमें जरा भी मन्देह नहीं रह गया है कि तुम्हारा आला बहु ही उञ्चल और उच बताबरणों विचरनेशल है। यदि तुम हम स दीवा केतर प्रमुक्ते शासनकी सभा करने बना तो तुम्हारे द्वारा अला और संसारका बहुत हा कल्याण हो; परन्तु यह जान कर द्व[ा]र्दे की होगा कि अब तक तुरहारी दीवाजा समय नहीं आया है। जह नर्व दिनित हो उठी यी—जो अपनेको न सेंभाल सकी यो—वह दुर्वेल हरको की ऐसे पुरुषके साथ चिर समय तक एकान्त सहवासमें रह कर स्वा अपने संकराको सुरक्षित रख सकेगा, कभी नहीं। यह निरसंदह है कि ऐसे संवोगोंम, जो हर्यको दुर्वेज बतानेवाल हैं, कभी सफलता नहीं हो सकता। इन सब बातोंको सोच-विचार करके रत्नमालाने दिसर किया कि इसी तरह जो दो-चार वर्ष और बीत जाय तो फिर कै सार्थान हो जाऊँगी और फिर मुझे कोई बातकी चिन्ता न रह विस्तान । और इसके बाद दोसा लेकर अपने संकर्णको साधनामें भी कैरें प्रकरको विन्त-बाबा उपस्थित न होगी; परन्तु उसका यह संकरण

ाउन हो सका।

एक दिन बड़ो बबराइटके साथ बद्धभूतिने सनमाञासे कहा—वेटी,

एक दिन बड़ो बबराइटके साथ बद्धभूतिने सनमाञासे कहा—वेटी,

भी एक प्रार्थना तुन्ने स्वी नार करनो हो पड़ेगो। उसे बिना स्वीकार

किये तेम सुटकाम नहीं दे। और इतने पर भी पदि त नेती प्रार्थना
स्वीकार न करेगो तो समम त् अपने वृद्दे पिताको सदाके लिए खो

वैठेगो। यदि त न्याइ न करेगो तो भैने अपने किए दो ही मार्ग

हिए किये हैं। सो या तो भै आस्त-वात करके मर भिट्टेंगा या घर
इत सोड़ कर जंगल जंगल भटकते-फिरते जावन समाम कर दूंगा!

दिताबोक इन दुःख भरे उद्दारीको पितृ-भक स्नमाल न सह सकी।

विकाब हर पर्या उठा। उसे इस बातका कभी विचार भी न आया

पा कि उसके लिए पिताबोको इतना भारी कप्त सहना पहेगा!

वसुभूतिके रान्दी और उनमेंसे निकलते हुए हरवको हिला देनबाले

साबोका सनमालके हरप पर बहुत ही गहरा असर पड़ा। योड़ो देर

दीक्षा देनेको तैयार होँडमी-न्तो निस्सन्देह मुद्रे भी मणिभदके है ही उत्तर मिळेगा । इस कारण अब पिताबीके जीते वी तक तो ह जिस तरह हो इस समयको बिताना ही उच्ति है ।

मणिभङ

वसुभृति अब अपनी पुत्री रतनगढाके साथ धनदत्तके घर पर

दिते हैं। दोनों एक हो स्थापक वृद्ध सम्मन पुरुष है। आने स्थरी सदा सानन्द और धर्म-प्यासमें बिताले रहेते हैं। वार-मुझ भी अब बेमारे स्वर्धी अस्पत्र के स्वर्धी अस्पत्र के स्वर्धी अस्य स्वर्धी अस्य सामन्द्र से स्वर्धी अस्य सामन्द्र से स्वर्धी अस्य सामन्द्र से स्वर्धित धुक्ति मी तिर एवं स्थाने योग हो ने हैं। समय पासन्य स्वर्धान अपने शिताके पास आती उस समय समुम्रीत प्रसंत सामन्द्र अस्य स्वर्धीत अस्य स्वर्धीत अस्य स्वर्धीत अस्य स्वर्धीत अस्य सामन्द्र स्वर्धीत स्वर्धीत सामन्द्र से सामन्द्र स

प्रकोमनोंसे वे राजाबाको ब्याहको छिए परेखा-प्रायक्ष प्रेराणा के देश परना राजाबीका विदेश पर इन प्रकोमनों और प्रेराजाबीका विदेश भी स्वार न पड़ा । वह दिसी प्रकार स्वाह करनेको समान न हैं जिन जब जब बहुमि उसके सामने स्वाहकी बच्चों छेड़ने ये तब तर वे विद्याहकी करने हैं। उसके सामने स्वाहकी बच्चों छेड़ने ये तब तो वे विद्याहकी सामने सामने

कर डाउँगी। अभ भिरिमक्के साथ प डा डो देर नक बान-बीत कर्सने इंक निक्ष्य डो गया था कि यदि शह शाह करे और देस खास मेरि बढ़े के संप्, नी उसके आल्कान स्थिर किये दुर यशित्र खाता करि नींद्र नहीं डो सकरी निस्मृत रहा है। बहुत देशेन स्थाने

216



मनिभन्न

कानेका दढ़ सकता किया दे उसे सार्वक किस प्रकार का का मैंने सुना है कि जब तक तुम्दें तुम्होरे पिताओं को अबा जायगी तक तक तुन दोशा महण नहीं कर सकते। और हर्ष मेरा विश्वास दे कि तुम्बारे पिनाओं अब बहुत मुहे दो बरे की कारण वे कभी आज्ञा न देंगे । और यह भी अधिन नहीं है है

समझोगे । मणिभद्रने वहा-" सनमावा, तुम जो कुछ कहती हो सं है और यह भी संभव नहीं कि विताजांकी दिना आजा जिय में ह

छोड़ कर चल हूँ । रहूँगा तो में समार होने पुरन्तु केवल हतनी की लिए न्याह करके गृही-धर्म स्वीकार करना कभी पसन्द नहीं कर्ता इतना कदते यहते मणिभन्न आवेषपूर्ण नेत्र रतनगणके औदर्ग नेत्रोके साथ निज गये । मणिमदको जान पड़ा कि रतमाला है वे अन्यक ऑम् छलक अयं है। इसके लिए यह मोड़ी दे। तही विचार कर फिर बोडा-" रनमाडा, मैंने सुना है कि तुम्हार हिं भी तुम्होर स्याहके लिए टङ संकल्प किया है और तुमने स्याह ^हैं शासन-संवाध आन्मे सर्ग करनेकी दद इच्छा प्रकट की है। तर्

तुम्हारे लिए भी मेरे ही सदश सयोग उपस्थित है। बतलाओं है तुम किस मार्गका आश्रय छोती । " रलमाळा बोळी-' मणिमड, सच कहनी है, ब्याह करनेकी ना^{ब हुई} खिए भी मेरी इच्छा नहीं है, पान्त मेरे वशकी कोई बात नहीं।

का इतना अधिक आपद दें कि मैं उनकी आड़ा लॉब नदी सं^{ह्}री



बुदुम्बक टोर्गोको सुझी-सन्तुष्ट कर सकते हैं। इम उन बातोंको अपी तरह समन्न जुके हैं कि जिनके कारण हम अब तक स्पाह करते नैपार न इप और न अब हैं। इस बातका र्यवाद मी भय नहीं है

कि हनोर पवित्र स्याह-सम्बन्धते हमारी पुवित्र और उस भावनाओंने किसी प्रकारका धका लगेगा । मोध-मुखकी इच्छा स्थनेवारे विक होग जिस उद्देश्यसे स्थाद नहीं करते हैं उस उद्देश्यको तो इन स्थाह हो जानेके बाद भी सुरक्षित रख सर्पेंगे। और यह तब हो सं^{इत} दे जब कि तुम्हारा और मेरा परस्पर ब्याड हो जाय । देशा किये किंग इन अपनी उच आवांकाओंको कभी द्वाक्षित नहीं एवं सबते । हैं पूर्ण विकास है कि प्रभुकी इस पर पूर्ण करा है, और यह भी छ निश्चय है कि प्रभुकी उस कपाके बजसे हम इस अग्नि-परीक्षामें बहुत ही सरलताके साब उत्तीर्ण हो सकेंगे। तुन कुछ अधिक ध्यानसे मेरी हर सलाह पर विचार करोगे तो सब बातें खुलासा समझमें आ जायँगी। मणिभद्र अव रत्नमाळाके भावोंको अच्छी तरह समझ गया । उसने षेडा देर तक और इस विषय पर ऊद्दा-पोह कर अपना विवास रिवर कर थिया। इसके बाद उनमें अर भी ब<u>ह</u>तसी वार्ते होती रहीं। अन्तर्ने त्राते समय मणिभद्रते सनमाजाने कहा--- अध्धा बात है सनमाजा तैसा तुम चाहती हो वही होगा। देखता हूँ कि इम छोगों के छिए संसार करने और बाह करके गृहत्थियोंके जैसा बाह्य व्यवहार-सम्बन्ध

नके सिवा कोई छुरकारका मार्ग नहीं है। अस्त; इस छोग उदा-







मधियद

बाठ-बचा हो जाप तो उसका सुन्दर मुख देख कर किर में की साथ मर्केड परम्य उनको इस इन्डाके नाकाल सकल दिनेश पर्वेड विन्दा दिखा है नहीं दिखा | उनके तक यह विवाद करें सामा किया कि चाड़े राजवाला निश्मतान मोन ही रह कें इतना तो जन्म इन्डाक कि बद्ध संस्थान पूर्व में इस इर्ड इं उदय आयेगा तह निश्चय है कि उसके सम्मान होगी। हो हुए कि भेरे भाग्यमें दोदिनेका मुख देखना न दिखा हो । इस में तो कोई दोन नहीं है । इसी प्रकार सम्मन्दर्य ननने भी कर्ता ऐसी हमामिक इन्डाल उन्हाल करती थी। एरनु देंगे कर्कों वक्का कोई सत न देख कर वे अपने महस मितनो प्रकार

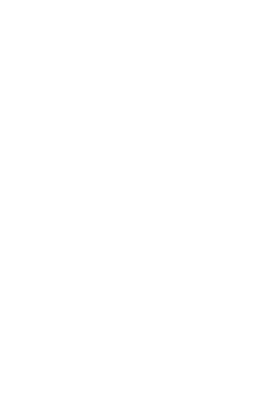
.

वर्षे बीत गये । बहुमूर्तिकी उत्कट इच्छा बी कि सनगणके

समद और भणिमाहिनोने पुत्र रहेगारा सब भार स्टबम्स के हैं गृहिनी हीहाको सीय कर सो-सहरिन्यों है आहास जिनदीन कि कर होने सहरिन्यों है आहास जिनदीन कि कर होने की स्वाप्त के प्राप्त कर है की का कारण के प्राप्त कर है की है के स्वाप्त के हैं है की सहन के प्राप्त का स्वाप्त कर है की सहन के प्राप्त कर है की सी के से स्वाप्त के साम का का का का का का का का का किया के साम के साम का का का का का का का











प्रदेशक 3740 (1

प्रतास्त्र होते को मनिनदंते आने परिवादे केरोंने इनकी माजाने मारार-रियय में हो ही वरादे किए पीला क इत्त कियान भी अर्थ नक्तारी बाई हो उनु उन्हें के बर्ग के लोग है उदार कानि प्राप्ति व्यक्ति हरने द्रमुद्र बाद महान्य और (अमात्राप्त राज्याद कर्या शानतम् ताम देशा वहत करते। देशा जित्रहरू मैंगे-शत में भाव और एनबाबा आंत्रुश राजह द्वार ह मात्र कर्णा । सात्रेगदश्च प्रशासका सामान्त्रे दालाह और शर्वाते को दिया के मध्य विश्वम प्रा की वृत्र प्रमाण Med affig me uftent uie at if & i feb. श्वाीको स नन्द्रवाके सुनने की सम्बन्धके गीति IN ROLF BY AS WHOLE AND THE प्रेक्शासन्त्र प्रचार बहुने बता । प्रचारको त हैंप करों। जो निर्देश करते बाद रहता हा कर्न मेरे लग्ने हम कर स्पर्ध रहे

End went and a By ! (So Electry प्रतिब केन्द्री प्रवासी प्रवश्तिको है। इंडी Sale and Sale Will say Berney Sale by AR WING SCHOOL SEE & THE SE, FER. The same of the sa May the stage of t







मःणिभद्र अपना अस्तिम बाक्य समाप्त करना है कि इसके पहुने ही रत्नभावा गद् गद् होकर बोटी-"प्राणनाय, आहां ! में किने का दूँ । क्या तुम्हें ! जिस पवित्र मूर्निके दर्शन मात्रसे हृद्यमें पूजा करेनसे भावनायें उठने लगती हैं, जिस के कण्ठकी समद्भर व्यनि सन वर प्राप्त शीतज हो जाते हैं, कानोंने अमृतकी धारा जैसी बई उठती है, बिहहे सहवाससे शरीर और मन पवित्र होता है उसे आजा देने के निए बहुने हो ! अच्छा प्राणनाय, बतलाओ तो सदी जब मैं तुम्हें आज़ा दें दूँगी तव मुद्रे जीनेके ढिए किसका आधार रह जायगा ! नाव, क्षमा करें। में नहीं समझ सकती कि आज मेरा मन इतना अशान्त और निर्देख स्थे बना आ ग्द्रा दे ! इस बातका कुछ निर्णय नहीं कर सकती कि

संमार पश्चिम करते समय हृदयमें इतनी धवगहट क्यों हो सी है।" इतना कड कर रतनावा एक साथ रे। पद्गी हृदयकाचेन उससे सभावा न गया। यह बड़ी देर तक बैठी बैठी रोती रही। जब बहुत है चुक्ते बाद उसके हृदयका भार कुछ हुछका हुआ और यह कुछ स्वर्ध दुई तब उसने कहा-" नाय, छोड़ी; इस संसारको छोड़ी ! जिस संस्त में फेंस कर मनुष्य अपना कर्सच्य मूख जाते हैं उस संसाको होते! जिस ससारमें मनुष्य अपने आपको भी मुख जाता है उस ससारकी छोड़ो । अब इस संसारमें में द करनेको आवस्यकता नहीं है। आओ

उन र अभी के आंसू रीछ कर उन्हें धीरज वैधानेके विद जाजी !

नाय जाओ, सदाके डिये जाओ ! जिस बीतराग-धर्म -मार्ग परएक वा भी चडनमें संसारके जन्म-माण आदि सब भय नष्ट हो जाते हैं वह मार्ग पर जाआ ! जाओ, प्राणेश्वर जाओ; दुखियों के दुःख करने और



माणेभद्र उपसंदार।

प्रातःकाल होते ही भिनेभदिन अपने परिवारने छोगोंदे नित्र को जनकी आद्वासे ससार-विश्य-भोगोंको सदक्ते हिए परिवान कर दिन उसने दिस्तेन जो अपार धन-सम्पदा आदि भी उसे उसने दिनप्दर मे देगाने, तोचीने उदार कराने आदि धार्तिक कार्योमें दे बाल एसे बाद मणिनद और सनमालाने राजगृह जाकर दुम्म महुदे बंधमुक्ते पा

करन छन्।। और तीपीयें जो विशाल फेन्य जिनमंदिर बने ये ये अब तक भी उसके पश्चिम कीर्ति और गी।यका गान कर रहे हैं। किट्यु दस समय ³⁴ परयरिकों आरम-क्याके सुनने और समझनेवाल नहीं मिटते।









